ख़ुदा की क़सम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम
की रचनाओं से

संकलनकर्ता
बशीरुद्दीन अलादीन

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

साफ़ दिल को कसरते एजाज़ की हाजत नहीं
इक निशां काफ़ी है गर दिल में हो ख़ौफ़े किर्दिगार

ख़ुदा की क़सम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम की रचनाओं से

संकलनकर्ता
बशीरुद्दीन अलादीन

मुद्रण - फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

नाम पुस्तक : ख़ुदा की क़सम (हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद की रचनाओं से)

संपादक : बशीरुद्दीन अलादीन, हैदराबाद

अनुवादक : अन्सार अहमद, एम.ए., एम. फिल., आनर्स इन अरबिक, पी.जी.डी.टी.

प्रथम प्रकाशन उर्दू : 30 नवम्बर, 1988 ई.

प्रकाशन वर्ष : मई 2016

प्रकाशक : राशिद मुहम्मद अलादीन

संख्या : 3000

मुद्रण - प्रिंटवैल, अमृतसर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नह्मदोहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम
व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

निवेदन

अल्हम्दोलिल्लाह कि ख़ाकसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उन क़समों को जो आपने ख़ुदा तआला के नाम से खाई हैं आप ही कि किताबों से संकलित करके प्रकाशित कर रहा है ताकि वे लोग जिन के दिलों में ख़ुदा का डर है इसको पढ़कर अपनी सच्चाई को मालूम कर सकें। ख़ाकसार आदरणीय डाक्टर मुहम्मद हुसैन साहिब साजिद तथा आदरणीय राशिद मुहम्मद अलादीन साहिब का बहुत ही कृतज्ञ एवं आभारी है कि उनके बहुमूल्य सहयोग के कारण इस किताब को अल्लाह तआला ने छापने की सामर्थ्य प्रदान की अल्लाह तआला उन्हें अच्छा प्रतिफल प्रदान करे। खेद इस बात का है कि इस किताब के छापने से पहले ही डाक्टर मुहम्मद हुसैन साहिब साजिद का 25 मई 1988 ई. को स्वर्गवास हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला स्वर्गवासी को क्षमा करे, उनको श्रेष्ठता प्रदान करे, हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सानिध्य में स्थान दे। आमीन। अल्लाह तआला उनकी जीवन साथी सिद्दीक़ा बेगम साहिबा (पुत्री सेठ अली मुहम्मद अलादीन साहिब) तथा छोटे मासूम बच्चों का रक्षक एवं सहायक हो और सब को अमन एवं सुरक्षा में रखे। आमीन।

स्वर्गीय डाक्टर साहिब की प्रबल इच्छा के कारण मैं इस किताब को स्वर्गीय डाक्टर ख़लील अहमद साहिब नासिर की ओर समर्पित

करता हूं जिनको यह ख़ाकसार भी अपने स्टूडेण्ट होने के समय से जानता है जो बहुत ही नेक तथा इस्लाम एवं अहमदियत के प्रेमी थे। अल्लाह तआला दोनों स्वर्गवासियों को क्षमा करे तथा उनकी श्रेणियों को बहुत बुलन्द करे। आमीन

अन्त में यह ख़ाकसार अपने लिए दुआ की विनती करता है कि अल्लाह तआला इस तुच्छ प्रयास को स्वीकार करे तथा धर्म की सेवा करने की और अधिक शक्ति दे तथा अच्छा अंजाम हो। आमीन।

ख़ाकसार नाज़िर साहिब दावत व तब्लीग़ क़ादियान का भी कृतज्ञ एवं आभारी है कि उन्होंने इस का प्राक्कथन (पेश-ए-लफ़्ज़) लिखा तथा इस किताब का नाम भी प्रस्तावित किया और छापने की अनुमति प्रदान की। अल्लाह तआला उन्हें अच्छा प्रतिफल प्रदान करे।

दुआ का अभिलाषी
बशीरुद्दीन अलादीन
सेक्रेटरी तब्लीग़ व तरबियत जमाअत अहमदिया
सिकन्दराबाद 30 नवम्बर 1988 ई.

प्राक्कथन

मुसलमानों की सामान्य आस्था यह है कि इस अन्तिम युग में हज़रत ईसा इब्ने मरयम[अ.] पार्थिव शरीर के साथ आकाश से उतरेंगे और उम्मते मुहम्मदिया में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम प्रकट होंगे तथा दोनों मिलकर इस्लाम धर्म का प्रचार करेंगे। जैसे सामान्य मुसलमान इस अन्तिम युग में दो रूहानी पुरुषों के प्रकट होने के प्रतीक्षक हैं किन्तु पवित्र क़ुर्आन तथा हदीस की छः सही पुस्तकों से यह बात सिद्ध है कि हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम जो "रसूलन इला बनी इस्राईल" (सूरह आले इमरान) थे वह लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व अन्य नबियों की भांति मृत्यु पा चुके हैं। न वह इस पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर गए और न ही वहां जीवित हैं और न ही वह इस पार्थिव शरीर के साथ इस युग में संसार में उतरेंगे। हां यद्यपि कि आप[स.] की हदीसों से सिद्ध है कि धर्म के नवीनीकरण तथा उम्मत के सुधार के लिए मुहम्मद[स.अ.व.] की उम्मत में ही एक व्यक्ति प्रकट होगा जिसे इस्लामी परिभाषा में 'अलइमामुल महदी' कहा जाता है तथा वही रूहानी (आध्यात्मिक) दृष्टि से हज़रत मसीह इब्ने मरयम का मसील (समरूप) होगा। अतः हदीस में आया है :

(अ) لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى ابْنِ مَرْيَم

"ललमहदिय्यो इल्ला ईसब्ने मरयम" (इब्ने माजा, बाब शिद्दतुज़्ज़मान)

(ब) يُوشِكُ مَنْ عَاشَ مِنْكُمْ أَنْ يَلْقَى عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ إِمَامًا مَهْدِيًّا حَكَمًا وَ عَدْلًا

(मुस्नद अहमद बिन हंबल किताब मुस्नद अलमुकस्सिरीन)

كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَ إِمَامُكُمْ مِنْكُمْ (ज)

(सही बुख़ारी किताब अहादीसुलअंबिया, बाब नुज़ूल ईसब्ने मरयम)

अर्थात् ईसा बिन मरयम इमाम महदी होंगे तथा हकम और अदल (निर्णायक) होंगे और तुम्हारे इमाम तुम में से ही अर्थात् उम्मते मुहम्मदिया में से होंगे।

इन हदीसों से मालूम हुआ कि आने वाला मौऊद एक ही व्यक्ति है और वह इमाम महदी है तथा ईसा बिन मरयम का प्रतिबिम्ब और समरूप (मसील) है। क्योंकि जैसा कि वर्णन किया जा चुका है ईसा इब्ने मरयम बनी इस्राईल के रसूल थे और वह मृत्यु पा चुके हैं। इस संसार में उनके दोबारा आने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

2. ख़ुदा की ओर से आने वाले रसूल की सच्चाई के जहां और तर्क एवं साक्ष्य होती हैं उनमें से एक तर्क यह भी है कि वह अपने दावे में पूर्ण विश्वास एवं दृढ़ता के साथ ख़ुदा तआला को साक्षी बनाते हुए प्रस्तुत करता है। क्योंकि ख़ुदा तआला सच्चे और झूठे को जानता है। झूठा और झूठ घड़ने वाला ख़ुदा तआला का समर्थन और सहायता कभी नहीं पाता तथा ख़ुदा तआला के कथनानुसार قَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰي। (सूरह ताहा - 62) ख़ुदा के समर्थन एवं सहायता से वंचित, विफल और निराश ही नहीं रहता अपितु ख़ुदा तआला के दण्ड का पवित्र क़ुर्आन की इस आयत के अनुसार

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ - لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ -
ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ - (सूरह अल्हाक्क: 45 से 47)

पात्र बनता है।

3. नबी करीम[स.अ.व.] की हदीस में आता है कि एक बार एक व्यक्ति मदीना में आया और उसने आदरणीय सहाबा की उपस्थिति में

आंहज़रत[स.अ.व.] से प्रश्न किया कि आप अपने रसूल होने के दावे को ख़ुदा तआला की क़सम खाकर वर्णन करें। जब आंहज़रत[स.अ.व.] ने अपने दावे को क़सम खाकर वर्णन किया तो इसी पर वह आप पर ईमान ले आया। अत: बुख़ारी की यह हदीस अनुवाद के साथ निम्नलिखित है :-

عَنْ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِى الْمَسْجِدِ دَخَلَ رَجُلٌ عَلَى جَمَلٍ فَأَنَاخَهُ فِى الْمَسْجِدِ ثُمَّ عَقَلَهُ ثُمَّ قَالَ لَهُمْ أَيُّكُمْ مُحَمَّدٌ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّكِئٌ بَيْنَ ظَهْرَانَيْهِمْ فَقُلْنَا هَذَا الرَّجُلُ الْاَبْيَضُ الْمُتَّكِئُ فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ يَا ابْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَجَبْتُكَ فَقَالَ الرَّجُلُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّى سَائِلُكَ فَمُشَدِّدٌ عَلَيْكَ فِى الْمَسْأَلَةِ فَلَا تَجِدْ عَلَيَّ فِى نَفْسِكَ فَقَالَ سَلْ عَمَّا بَدَا لَكَ فَقَالَ أَسْأَلُكَ بِرَبِّكَ وَرَبِّ مَنْ قَبْلَكَ آللّٰهُ أَرْسَلَكَ إِلَى النَّاسِ كُلِّهِمْ فَقَالَ اللّٰهُمَّ نَعَمْ قَالَ أَنْشُدُكَ بِاللّٰهِ آللّٰهُ أَمَرَكَ أَنْ نُصَلِّيَ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ فِى الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ قَالَ اللّٰهُمَّ نَعَمْ قَالَ أَنْشُدُكَ بِاللّٰهِ آللّٰهُ أَمَرَكَ أَنْ نَصُومَ هَذَا الشَّهْرَ مِنَ السَّنَةِ قَالَ اللّٰهُمَّ نَعَمْ قَالَ أَنْشُدُكَ بِاللّٰهِ آللّٰهُ أَمَرَكَ أَنْ تَأْخُذَ هَذِهِ الصَّدَقَةَ مِنْ أَغْنِيَائِنَا فَتَقْسِمَهَا عَلَى فُقَرَائِنَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّٰهُمَّ نَعَمْ فَقَالَ الرَّجُلُ آمَنْتُ بِمَا جِئْتَ بِهِ وَأَنَا رَسُولُ مَنْ وَرَائِى مِنْ قَوْمِى وَأَنَا ضِمَامُ بْنُ ثَعْلَبَةَ أَخُو بَنِى سَعْدِ بْنِ بَكْرٍ

(सही बुख़ारी किताबुलइल्म)

अनस बिन मालिक से सुना। वह कहते थे कि हम नबी करीम[स.अ.व.] के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक व्यक्ति ऊंट पर सवार होकर

आया और उसे मस्जिद के (सहन) में बिठा दिया। फिर उसे (रस्सी से) बांध दिया। इसके पश्चात् पूछने लगा, तुम में से मुहम्मद कौन है ? हज़रत नबी[स.अ.व.] सहाबा[रज़ि.] के बीच तकिया लगाए बैठे थे। इस पर हमने कहा यह साहिब सफेद रंग जो तकिया लगाए हुए हैं। तो उस व्यक्ति ने कहा — हे अब्दुल मुत्तलिब के पुत्र ! नबी[स.अ.व.] ने कहा (हां कहो) मैं उत्तर दूंगा। इस पर उसने कहा कि मैं आप से कुछ पूछने वाला हूं और अपने प्रश्नों में कुछ कठोरता से काम लूंगा। अत: आप मेरे ऊपर क्रोधित न हों। आप ने कहा — पूछो जो तुम्हारी समझ में आए। वह बोला कि मैं आपको अपने रब्ब की और आप से पहले लोगों के रब्ब की क़सम देता हूं (सच बताइए) क्या अल्लाह ने आप को समस्त लोगों की ओर अपना सन्देश पहुंचाने के लिए भेजा है ?

आपने उत्तर दिया — अल्लाह तआला जानता है कि हां (यही बात है) फिर उसने कहा मैं आपको अल्लाह की क़सम देता हूं (बताइए) क्या अल्लाह ने आपको दिन-रात में पांच नमाज़ें पढ़ने का आदेश दिया है ? आपने फ़रमाया कि अल्लाह जानता है कि हां (यही बात है) फिर वह बोला मैं आपको अल्लाह की क़सम देता हूं (बताइए) क्या अल्लाह ने साल में इस (रमज़ान) के महीने के रोज़े रखने का आदेश दिया है ? अपने फ़रमाया अल्लाह जानता है कि हां (यही बात है) इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि जो कुछ आप (अल्लाह की ओर से आदेश) लेकर आए हैं मैं उन पर ईमान लाया और मैं अपनी क़ौम का जो पीछे रह गई है दूत (सफ़ीर) हूं, मैं लगाम हूं, सालिब: का लड़का बनी सअद बिन बकर के भाइयों में से हूं।"

(पृष्ठ - 29, 7, 1321, 63, 62) ब ख़

दूसरी ओर हदीस में यह दण्ड का वादा भी आया है कि

اَلْيَمِيْنُ الْفَاجِرَةُ تَدَعُ الدِّيَارَ بِعَلَاقِعَ

(मुस्नद अश्शिहाब बाबुल यमीन)

कि झूठी क़सम इलाक़ों (क्षेत्रों) को तबाह और बरबाद कर देती है अर्थात् झूठी क़सम खाने वाला न केवल यह कि ख़ुदा की बरकत से वंचित हो जाता है अपितु उसके दण्ड का पात्र भी बनता है।

4. चौदहवीं सदी हिज्री में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी प्रवर्तक जमाअत अहमदिया ने दावा किया कि

(अ) "मुझे ख़ुदा की पवित्र और शुद्ध वह्यी (ईशवाणी) से सूचित किया गया है कि मैं उसकी ओर से मसीह मौऊद और महदी मा'हूद तथा आन्तरिक एवं बाह्य मतभेदों का हकम (निर्णायक) हूं। यह जो मेरा नाम मसीह और महदी रखा गया, इन दोनों नामों से रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने मुझे सम्मानित किया और फिर ख़ुदा ने अपने सीधे वार्तालाप से मेरा यही नाम रखा फिर युग की वर्तमान परिस्थिति ने यही चाहा कि यही मेरा नाम हो। इसलिए मेरे इन नामों पर ये तीन गवाह हैं — मेरा ख़ुदा जो आकाश और पृथ्वी का मालिक है मैं उनको गवाह रख कर कहता हूं कि मैं उसकी ओर से हूं और वह अपने निशानों से मेरी गवाही देता है।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-17 पृष्ठ-345, अरबईन (1) पृष्ठ-3)

(ब) — बरेली से एक व्यक्ति ने जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब की सेवा में लिखा कि क्या आप वही मसीह मौऊद हैं जिसके बारे में ख़ुदा के रसूल[स.अ.व.] ने हदीसों में ख़बर दी है और ख़ुदा तआला की क़सम खाकर इसका उत्तर लिखें। इस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उसे क़सम खाते हुए लिखा कि

"मैंने पहले भी इस निम्नलिखित इक़रार को अपनी किताबों में

क़सम के साथ लोगों पर प्रकट किया है और अब भी इस पर्चे में उस ख़ुदा तआला की क़सम खाकर लिखता हूं जिसके अधिकार में मेरी जान है कि मैं वही मसीह मौऊद हूं जिस की ख़बर रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने उन सही हदीसों में दी है जो सही बुख़ारी तथा सही मुस्लिम तथा दूसरी सही हदीसों में लिखी हैं और अल्लाह पर्याप्त गवाह है।

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अफ़ल्लाहो अन्हो व अय्यदहू

17 अगस्त 1899 ई.

(मल्फ़ूज़ात जिल्द प्रथम, पृष्ठ -326, 327, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-2)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद ने अपने दावों के बारे में अपनी विभिन्न किताबों एवं लेखों में जो ख़ुदा तआला की क़समें खाई हैं उनको हमारे आदरणीय मित्र बशीरुद्दीन अलादीन साहिब सेक्रेटरी तब्लीग़ जमाअत अहमदिया सिकन्दराबाद ने इस पुस्तिका में संकलित किया है। इस रूह और दृष्टिकोण के अन्तर्गत कि नेक स्वभाव लोग हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावों पर गंभीरतापूर्वक विचार करें तथा दूसरी ओर उनके समर्थन एवं सहायता में उनकी जमाअत की सफलता और कामयाबी के ख़ुदाई व्यवहार को देखें ताकि उनको आपके मसीह और महदी के दावे को स्वीकार करने की सामर्थ्य प्राप्त हो और धर्म की सेवा तथा इस्लाम के प्रचार का सौभाग्य एवं अवसर प्राप्त हो। ख़ुदा उनको अच्छा प्रतिफल प्रदान करे। दुआ है कि अल्लाह तआला आदरणीय बशीरुद्दीन अलादीन साहिब के इस प्रयास को स्वीकार करे और उसके नेक और मनमोहक परिणाम प्रकट हों।

शरीफ़ अहमद अमीनी

एडीशनल नाज़िर दा'वत व तब्लीग़, क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नह्मदोहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम
व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

आज़मायश के लिए कोई न आया हर चन्द
हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबिल पर बुलाया हम ने
(दुर्रे समीन)

हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया की ओर से समस्त उलेमा को क़सम उठाने का

चैलेन्ज

उलेमा ने जमाअत अहमदिया के बारे में जो विभिन्न, अनुचित तथा अवास्तविक आस्थाओं को प्रकट करते हुए मुसलमानों में जो कुधारणाएं पैदा करने का प्रयास किया है उसके एक ठोस हल के लिए हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया ने 6 मार्च 1987 ई. के जुमा के ख़ुत्बे में फ़रमाया :

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत अहमदिया को क्या नसीहत की तथा आप का क्या धर्म था, क्या कलिमा था, यह आपके अपने शब्दों में सुनिए :-

"हम मुसलमान हैं और एक ख़ुदा जिसका कोई भागीदार नहीं पर ईमान लाते हैं।"

हां उन्होंने इस किताब से एक और परिणाम यह निकाला है कि शरीअत निरस्त (मन्सूख़) हो गई और उनके विचार में अब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का कलाम ही उनकी शरीअत है। आश्चर्य है उनके द्वारा लोगों को भड़का कर लड़ाई-झगड़ा कराने पर, ख़ुदा का थोड़ा सा भी भय नहीं करते, कैसे-कैसे बड़े झूठ बोलते हैं और कितनी अधिक धृष्टता से बोलते हैं, परन्तु यदि उनकी यही बात सच्ची है तो फिर मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी ने हमें जो शरीअत बताई है वह सुन लीजिए फिर उसको भी मानें किसी जगह ठहरें तो सही। यदि हम से वही व्यवहार करना है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें शिक्षा दी है और उसको ये लोग हमारी शरीअत मानने पर तैयार हैं तो फिर वह शरीअत सुन लीजिए, वह क्या है, वह शरीअत यह है :-

> "हम मुसलमान हैं, एक ख़ुदा जिसका कोई भागीदार नहीं पर ईमान लाते हैं और कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह को मानते हैं और ख़ुदा की किताब तथा उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो ख़ातमुल अंबिया है मानते हैं, फ़रिश्तों तथा दोबारा उठाए जाने, स्वर्ग-नर्क पर ईमान रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं और अहले क़िब्ल: हैं तथा जो कुछ ख़ुदा और रसूल ने हराम (अवैध) किया है उसे अवैध (हराम) समझते हैं और जो कुछ वैध (हलाल) ठहराया है उसे वैध ठहराते हैं। हम शरीअत में न कुछ बढ़ाते और न कम करते हैं तथा एक कण के बराबर भी कमी या अधिकता नहीं करते और जो कुछ ख़ुदा के रसूल[स.अ.व.] से हमें पहुंचा है उसे स्वीकार करते हैं चाहे हम उसको समझें या उस के भेद

को न समझ सकें और उसकी वास्तविकता तक न पहुंच सकें तथा हम अल्लाह की कृपा से एक ख़ुदा पर ईमान रखने वाले मुस्लिम हैं।"

(नूरुल हक़ भाग प्रथम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-8, पृष्ठ-7)

इसलिए यदि उनके विचार में अहमदियों की शरीअत वही है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन की है तो फिर वह शरीअत तो यह है किन्तु झूठ के पैर नहीं होते। कभी इस पैर पर खड़ा होता है कभी दूसरे पैर पर खड़ा होता है। कोई एक बात तो स्पष्ट तौर पर स्वीकार करें और प्रण करें कि हां हम इस बात से नहीं हटेंगे।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"मैं सच कहता हूं और ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है और आंहज़रत[स.अ.व.] तथा पवित्र क़ुर्आन पर उसी प्रकार ईमान लाती है जिस प्रकार एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए।"

(लेक्चर लुधियाना, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-20, पृष्ठ-260)

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि ये इल्ज़ाम लगाना इसी प्रकार जारी रहे और ये बातें और काल्पनिक क़िस्से जमाअत अहमदिया की ओर सम्बद्ध करते चले जाएं और हमें उत्तर देने की इजाज़त न हो और जमाअत अहमदिया के बोलने पर भी पाबन्दी लगी हो तथा एक देश में क़लम (लिखने) पर भी पाबन्दी लगी हो और वह अपनी आवाज़ पहुंचाने का प्रयास करे परन्तु स्पष्ट है कि मार्ग में बहुत सी रुकावटें होंगी, कठिनाइयां होंगी और जिस प्रचुरता से उनके झूठ घड़ने की गन्दगी फैल रही है तथा जहां-जहां तक यह गन्दगी पहुंच रही है जमाअत के

लिए संभव नहीं है कि अपने सीमित संसाधनों से उन समस्त स्थानों तक अपना सन्देश रूपी उत्तर पहुंचा दे। तो इस का क्या हल है ? एक ही हल है और मैं सम्पूर्ण जमाअत अहमदिया की ओर से उन सारे उलेमा को चाहे वे पाकिस्तान में रहने वाले हों या बाहर हों।

यह चेलेन्ज करता हूं

कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस प्रकार ख़ुदा तआला के पवित्र नाम की क़समें खा कर यह घोषणा की है कि मेरा कलिमा वही है जो सब मुसलमानों का कलिमा है और मेरा रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] हैं और मेरा इन सब बातों पर ईमान है जो इस्लाम लाने के लिए जिन बातों पर ईमान लाना आवश्यक है। जिस वैभव और शान से आप ने क़सम खाई है तथा झूठों पर ला'नत डाली है इस प्रकार यदि ये अपने दावे में सच्चे हैं तो ये क़सम खाएं और सारे उलेमा मिलकर क़सम खाकर यह बयान पाकिस्तान में प्रकाशित करें और बाहरी संसार में उसके अनुवाद करा के प्रकाशित कराएं कि हम अल्लाह तआला को मौजूद और दृष्टा समझ कर यह विश्वास रखते हुए कि झूठों पर उसकी ला'नत पड़ती है और यह दुआ करते हुए कि यदि झूठे हों तो ख़ुदा हम पर ला'नत डाले तथा हमें अपमानित करे इस संसार में भी और आख़िरत में भी तथा यह घोषणा करते हैं कि जमाअत अहमदिया का कलिमा वास्तव में और है तथा जब यह कलिमा पढ़ती है, जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहती है तो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अभिप्राय होते हैं तथा इन की शरीअत और है, इन का ख़ुदा और है और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब को ये लोग (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आंहज़रत[स.अ.व.] से श्रेष्ठ मानते हैं, प्रत्येक शान में श्रेष्ठ समझते हैं।

अत: जितने झूठ ये लोग बना रहे हैं यदि इनमें कुछ भी स्वाभिमान और ईमान है तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो यह क़सम पहले से खा चुके हैं ये लोग भी आकर क़सम खा जाएं और फिर देखें कि ख़ुदा का प्रारब्ध (तक़्दीर) क्या प्रकट करता है।

बद्-दुआ करने से तो मैं रोकता हूं परन्तु ये लोग ऐसे अत्याचारी हैं, इनके अन्दर ऐसी निष्ठुरता पाई जाती है, झूठ और मनघड़त बातों पर ऐसा साहस है कि आप को इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं रहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उस चेलेन्ज को जो अपने अन्दर एक गुप्त चेलेन्ज रखता है इनकी ओर फेंकूं और उन से कहूं कि तुम भी यदि साहस रखते हो और वास्तव में तुम संयमी हो और ख़ुदा पर ईमान लाते हो तो तुम इस प्रकार का साहस दिखाओ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस शान के साथ अल्लाह को गवाह और मौजूद एवं दृष्टा समझ कर प्रतिज्ञा की है तथा एक घोषणा की है तुम भी ऐसी एक घोषणा कर दो कि ये लोग झूठे, दुष्कर्मी, व्यभिचारी एवं पापी तथा आंहज़रत[स.अ.व.] के अवज्ञाकारी और इस्लाम धर्म से विमुख तथा बहाइयों की भांति एक नवीन धर्म बनाने वाले हैं। ये सारी बातें और जो इल्ज़ाम लगाए गए हैं ये लोग इस पर घोषणा कर दें फिर देखें कि ख़ुदा की तक़्दीर (प्रारब्ध) क्या निर्णय करती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"अन्तत: मैं पुन: जन सामान्य पर स्पष्ट करता हूं कि मुझे महाप्रतापी ख़ुदा की क़सम है कि मैं काफ़िर नहीं 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' मेरी आस्था है और वलाकिन रसूलुल्लाहे व ख़ातमुन्नबिय्यीन (अलअहज़ाब - 71) पर मेरा ईमान है। मैं अपने इस ईमान के औचित्य पर इतनी क़समें खाता हूं जितने ख़ुदा तआला के

पवित्र नाम हैं और पवित्र क़ुर्आन के जितने अक्षर हैं तथा जितनी ख़ुदा तआला के यहां आंहज़रत[स.अ.व.] की विशेषताएं हैं, मेरी कोई आस्था अल्लाह और रसूल के कथन के विपरीत नहीं तथा जो कोई भी ऐसा विचार करता है स्वयं उसका बोधभ्रम है तथा जो व्यक्ति मुझे अब भी काफ़िर समझता है और काफ़िर कहने से नहीं रुकता, निस्सन्देह स्मरण रखे कि मरने के पश्चात् उस से पूछा जाएगा।"

(करामातुस्सादिक़ीन, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-7, पृष्ठ-67)

उत्तर में शक्ति है, शान है किन्तु साथ एक दया का पहलू भी है "मरने के पश्चात् उस से पूछा जाएगा"

परन्तु ये लोग इतने बेबाक और धृष्ट हो चुके हैं कि अब उनको यह कहना चाहिए कि यदि हम झूठे हैं तो ख़ुदा इस संसार में भी हमें पूछे। अब तो ये लोग उस व्यक्ति के मार्ग पर चल पड़े हैं जिसने यह कहा था कि इस संसार में भी फिर हम पर पथराव हो और आकाश पत्थर बरसाए।

इसलिए जब इतनी अधिक धृष्टता धारण कर चुके हैं तो फिर आगे बढ़ें और यह घोषणा करें। ख़ुदा की क़समें खा कर कहें कि हम झूठें हैं तो अल्लाह हम पर इस संसार में ला'नत डाले और हमें बरबाद, अपमानित और बदनाम कर दे। यदि हम इस दावे में झूठे हैं कि अहमदी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कलिमा नहीं पढ़ते अपितु मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का कलिमा पढ़ते हैं, मुहम्मद[स.] के धर्म को नहीं मानते अपितु एक और धर्म बनाया हुआ है, क़ुर्आन को मानने वाले नहीं अपितु एक और किताब है जो क़ुर्आन के विपरीत तथा उस से अलग एक और किताब बना ली गई है, उनकी शरीअत बहाइयों की भांति एक भिन्न शरीअत है, उन का ख़ुदा और है, उनका

रसूल और है अपितु मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी को (हम ख़ुदा से शरण चाहते हैं) मुहम्मद रसूलुल्लाह से श्रेष्ठ ही नहीं अपितु ख़ुदा मानते हैं। ये सब बातें, ये सब बकवास इसी किताब में मौजूद हैं।

तो फिर यह कर लें और करके दिखाएं तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ख़ुदा के आक्रोश की ज्वाला अवश्य प्रकट होगी, आप अपनी आंखों के सामने देखेंगे कि ख़ुदा की तक़्दीर (प्रारब्ध) किस प्रकार उनके टुकड़े-टुकड़े कर देगी तथा अपमानित, बदनाम और असफल करके दिखाएगी। असफलता तो बहरहाल उनके भाग्य में है किन्तु हम तो यह विनती करते हैं और उसी की हमेशा ख़ुदा से आशा करते हैं कि इनको ख़ुदा हिदायत दे, अल्लाह उन पर दया करे, ये लोग अपनी बुराइयों को छोड़ दें और यह हम इसलिए करते हैं कि हम ख़ुदाई अपने हाथ में नहीं लेते। आंहज़रत[स.अ.व.] को तो ख़ुदा ने स्वयं रोक दिया था परन्तु इनमें से कौन से ऐसे हैं जो प्रकोपित हैं और कौन से ऐसे हैं जो बीच में से नेक रूह रखते हैं हमें ज्ञान नहीं इसलिए हृदय तैयार नहीं होता कि पूर्ण रूप से ऐसी ला'नत डाली जाए परन्तु अब मैं जो प्रस्तुत कर रहा हूं उसका तो अर्थ यह है कि यदि उनमें से कोई साहस रखता है तो हम ला'नत नहीं डालते वह स्वयं आगे आए और अपने दावे के समर्थन में यदि झूठा है तो स्वयं अपने ऊपर ला'नत डाले। यदि उनमें इसकी हिम्मत है तो आएं, आप देखेंगे कि ख़ुदा की तक़्दीर किस प्रकार उनको अपमानित और बदनाम करके दिखाती है।

(ख़ुत्बा जुमा 6 मार्च 1987 से उद्धृत)

इब्ने मरयम मर गया हक़ की क़सम
दाख़िले जन्नत हुआ वह मुहतरम

(दुर्रेसमीन)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम के साथ

हुवन्नासिर

आईना कमालाते इस्लाम

क़सम खाने का उद्देश्य

"क़सम के बारे में भली भांति याद रखना चाहिए कि महावैभवशाली ख़ुदा की क़समों का मनुष्यों की क़समों पर अनुमान लगाना ऐसा ही है जैसे एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर अनुमान लगाना जबकि उनमें परस्पर कोई समानता या अनुकूलता नहीं। ख़ुदा तआला ने मनुष्य को ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य की क़समें खाने से मना किया है तो इसका कारण यह है कि मनुष्य जब क़सम खाता है तो उसका उद्देश्य यह होता है कि जिस वस्तु की क़सम खाई है उसे एक ऐसे चश्मदीद गवाह के स्थान पर खड़ा करे जो अपने व्यक्तिगत ज्ञान से उसके बयान का सत्यापन या उसे झुठला सकता है, क्योंकि यदि सोच कर देखो तो क़सम का वास्तविक अर्थ गवाही ही है। जब मनुष्य साधारण गवाहों के प्रस्तुत करने से असमर्थ हो जाता है तो फिर क़सम का मुहताज होता है ताकि उस से वह लाभ उठाए जो एक चश्मदीद गवाह की गवाही से उठाना चाहिए परन्तु यह प्रस्तावित करना या आस्था रखना कि ख़ुदा के अतिरिक्त भी कोई मौजूद और दृष्टा है और सत्यापन झुठलाना, दण्ड देना या किसी अन्य बात पर समर्थ है स्पष्ट कुफ्र का कलिमा है। इसलिए ख़ुदा तआला की समस्त किताबों में मनुष्य के लिए यही शिक्षा है कि ख़ुदा के अतिरिक्त की क़सम कदापि न खाएं।

अब स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला की क़समों का मनुष्य की क़समों के साथ अनुमान लगाना उचित नहीं हो सकता क्योंकि ख़ुदा तआला को मनुष्य की भांति कोई कठिनाई नहीं आती कि जो मनुष्य को क़सम के समय पेश आती है अपितु उसका क़सम खाना एक और रंग का है जो उसकी शान के यथायोग्य और उसके प्रकृति के नियम के अनुकूल है।"

(आईना कमालाते इस्लाम, पृष्ठ 95-96 हाशिया रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-5)

दिलबरा मुझ को क़सम तेरी यकताई की
आपको तेरी मुहब्बत में भुलाया हम ने

(आईना कमालाते इस्लाम, पृष्ठ-225, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-5)

"वल्लाहे इन्नी क़द रअयतो जमालहू
अल्लाह तआला की क़सम मैंने आपका सौन्दर्य देखा है।
बिउयूने जिस्मी क़ाइदन बिमकानी
अपनी भौतिक आंखों से अपने मकान में।"

(आईना कमालाते इस्लाम, पृष्ठ-593, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-5)

हक़ीक़तुल वह्यी

"इस उम्मत में कुछ लोग ऐसे पैदा होंगे जिनका नाम यहूदी रखा जाएगा। ऐसा ही इसी उम्मत में से एक व्यक्ति पैदा होगा जिसका नाम ईसा और मसीह मौऊद रखा जाएगा। क्या आवश्यकता है कि हज़रत ईसा को आकाश से उतारा जाए और उसकी स्थायी नुबुव्वत का लिबास उतार कर उम्मती बनाया जाए। यदि कहो कि यह कारवाई बतौर दण्ड के होगी क्योंकि उनकी उम्मत ने उनको ख़ुदा बनाया था तो यह उत्तर भी व्यर्थ है क्योंकि इसमें हज़रत ईसा का क्या दोष है।

मैं यह बातें किसी अनुमान या कल्पना से नहीं कहता अपितु मैं ख़ुदा से वह्यी पाकर कहता हूं और मैं उसकी क़सम खाकर कहता हूं कि उसने मुझे यह सूचना दी है। समय मेरी गवाही देता है, ख़ुदा के निशान मेरी गवाही देते हैं।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 30-31, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-33)

मेरे ही युग में रमज़ान के महीने में चन्द्र और सूर्य ग्रहण हुआ, मेरे ही युग में पहली पुस्तकों के अनुसार ताऊन आई मेरे ही युग में मेरी भविष्यवाणी के अनुसार भयंकर भूकम्प आए तो फिर संयम की मांग नहीं थी कि मुझे झुठलाने का साहस न किया जाता ?

देखों मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि मेरे सत्यापन के हज़ारों निशान प्रकट हुए हैं और हो रहे हैं और भविष्य में होंगे। यदि यह मनुष्य की योजना होती तो उसका समर्थन एवं सहायता कदापि न होती तथा यह बात न्याय एवं ईमान के विरुद्ध है कि हज़ारों निशानों में से जो प्रकट हो चुके केवल एक या दो बातों को लोगों को धोखा देने के लिए प्रस्तुत करना कि अमुक, अमुक भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। हे

मूर्खो ! और बुद्धि के अंधो ! तथा न्याय और ईमान से दूर रहने वालो ! यदि हज़ारों भविष्यवाणियों में से एक या दो भविष्यवाणियों का पूरा होना तुम्हारी समझ में नहीं आ सका तो क्या तुम इस बहाने से असमर्थ ठहर जाओगे तौबा करो कि ख़ुदा के दिन निकट हैं तथा वे निशान प्रकट होने वाले हैं जो पृथ्वी को हिला देंगे।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 45-46, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-48)

हाशिया

"यदि ख़ुदा तआला के निशानों को जो मेरे समर्थन में प्रकट हो चुके हैं आज के दिन तक गिना जाए तो वे तीन लाख से भी अधिक होंगे। फिर यदि इतने अधिक निशानों में से दो-तीन निशान यदि किसी विरोधी की दृष्टि में संदिग्ध हैं तो उनके बारे में शोर करना और इतने अधिक निशानों से लाभ न उठाना, क्या यही इन लोगों का संयम है, क्या नबियों की भविष्यवाणियों में इसका उदाहरण नहीं पाया गया।"

"अब मैं आयत وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ के अनुसार अपने बारे में वर्णन करता हूं कि ख़ुदा तआला ने मुझे तीसरी श्रेणी में सम्मिलित करके वह ने'मत प्रदान की है जो मेरे प्रयास से नहीं अपितु मां के पेट में ही मुझे प्रदान की गई है। उसने मेरे समर्थन में वे निशान प्रकट किए हैं कि आज की तिथि से जो 16 जुलाई 1906 ई. है यदि मैं उनको एक एक करके गिनूं तो मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कह सकता हूं कि वे तीन लाख से भी अधिक हैं और यदि कोई मेरी क़सम का विश्वास न करे तो मैं उसको प्रमाण दे सकता हूं।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ-67, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-70)

"ताऊन के दिनों में जबकि क़ादियान में ताऊन ज़ोर पर थी मेरा पुत्र शरीफ़ अहमद बीमार हुआ और एक तीव्र ज्वर टायफायड के रूप

में चढ़ा जिससे वह बिल्कुल बेहोश (मूर्छित) हो गया और बेहोशी में ही वह दोनों हाथ-पैर मारता रहा। मुझे विचार आया कि यद्यपि मनुष्य को मौत से चारा नहीं परन्तु लड़का इन दिनों में जो ताऊन का ज़ोर है यदि मृत्यु पा गया तो समस्त शत्रु इस टायफाइड ज्वर को ताऊन ठहराएंगे और ख़ुदा तआला की उस पवित्र वह्यी को झुठलाएंगे कि जो उसने कहा कि — انّی احافظ کلّ من فی الدار अर्थात् मैं प्रत्येक को जो तेरे घर की चारदीवारी के अन्दर है ताऊन से बचाऊंगा। इस विचार से मेरे हृदय पर वह आघात हुआ कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। रात के लगभग बारह बजे का समय था कि जब लड़के की दशा अस्त-व्यस्त हो गई और हृदय में भय पैदा हुआ कि यह साधारण ज्वर नहीं यह और ही विपत्ति है। तब मैं क्या वर्णन करूं कि मेरे हृदय की क्या दशा थी कि ख़ुदा न करे यदि लड़का मृत्यु प्राप्त हो गया तो अत्याचारी स्वभाव रखने वाले लोगों को सच्चाई छिपाने के लिए बहुत सा सामान हाथ लग जाएगा। इसी स्थिति में मैंने वुज़ू किया और नमाज़ के लिए खड़ा हो गया और खड़े होने के साथ ही मुझे यह अवस्था प्राप्त हो गई जो दुआ की स्वीकारिता कि लिए एक स्पष्ट निशान है और मैं उस ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि जिसके अधिकार में मेरे प्राण हैं कि अभी मैं कदाचित् तीन रकअत पढ़ चुका था कि मुझ पर कश्फ़ी अवस्था छा गई और मैंने कश्फ़ी दृष्टि से देखा कि लड़का बिल्कुल स्वस्थ है तब वह कश्फ़ी अवस्था जाती रही और मैंने देखा कि लड़का होश के साथ चारपाई पर बैठा है और पानी मांगता है तथा मैं चार रकअत पूरी कर चुका था उसे तुरन्त पानी दिया और शरीर पर हाथ लगाकर देखा कि ज्वर का नामो निशान नहीं।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 85-86, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ 87-88)

"21. इक्कीसवां निशान - यह कि समय लगभग बीस वर्ष का हुआ है कि जब मेरे पिता श्री ख़ुदा उनको रहमत में स्थान दे अपनी अन्तिम आयु में बीमार हुए तो जिस दिन उनकी मृत्यु निश्चित थी दोपहर के समय मुझे इल्हाम हुआ وَالسَّماءِ وَالطّارق और साथ ही हृदय में डाला गया कि यह उनके निधन की ओर संकेत तथा इसके अर्थ ये हैं कि क़सम है आकाश की और क़सम है उस घटना की जो सूर्यास्त के पश्चात् घटित होगी और यह ख़ुदा तआला की ओर से अपने बन्दे को मृत्यु शोक था। तब मैंने समझ लिया कि मेरे पिता श्री का सूर्यास्त के पश्चात् स्वर्गवास हो जाएगा तथा कई अन्य लोगों को इस इल्हाम की सूचना दी गई तथा मुझे क़सम है अल्लाह तआला की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं जिस पर झूठ बोलना एक शैतान और लानती का काम है कि ऐसा ही प्रकट हुआ।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 209, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-218)

"तब उसी समय ऊंघ की अवस्था में यह दूसरा इल्हाम हुआ — اليس الله بكافٍ عبدهٗ अर्थात् क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है। ख़ुदा के इस इल्हाम के साथ हृदय ऐसा दृढ़ हो गया कि जैसे एक कठोर पीड़ादायक घाव किसी मरहम से एक पल में अच्छा हो गया है। वास्तव में इस बात का बारम्बार परीक्षण किया गया है कि ख़ुदा की वह्यी में हार्दिक सांत्वना देने के लिए एक व्यक्तिगत विशेषता है और इस विशेषता की जड़ यह विश्वास है जो ख़ुदा की वह्यी पर हो जाता है। खेद इन लोगों के कैसे इल्हाम हैं कि इल्हाम के दावे के बावजूद यह भी कहते हैं कि ये हमारे इल्हाम काल्पनिक बातें हैं। न मालूम यह शैतानी हैं या रहमानी (ख़ुदाई) ऐसे इल्हामों की हानि उनके लाभ से अधिक है परन्तु मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता

हूं कि मैं इन इल्हामों पर उसी प्रकार ईमान लाता हूं जैसा कि पवित्र क़ुर्आन पर और ख़ुदा की अन्य किताबों पर जिस प्रकार मैं पवित्र क़ुर्आन को यक़ीनी तथा निश्चित तौर पर ख़ुदा का कलाम जानता हूं उसी प्रकार उस कलाम को भी जो मुझ पर उतरता है ख़ुदा का कलाम विश्वास करता हूं।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 210-211, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ 219-220)

"105 वां निशान — एक बार मेरे भाई स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब के बारे में मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि उन के जीवन के दिन थोड़े रह गए हैं जो अधिक से अधिक पन्द्रह दिन हैं। बाद में वह एक बार बहुत बीमार हो गए यहां तक कि केवल हड्डियां शेष रह गईं तथा इतने कमज़ोर हो गए कि चारपाई पर बैठे हुए मालूम नहीं होते थे कि कोई इस पर बैठा हुआ है या खाली चारपाई है। मल-मूत्र ऊपर ही निकल जाता था तथा बेहोशी की अवस्था रहती थी। मेरे पिता श्री स्वर्गीय ग़ुलाम मुर्तज़ा बड़े दक्ष वैद्य थे, उन्होंने कह दिया कि अब यह स्थिति निराशा की है। केवल कुछ दिनों की बात है। मुझ में उस समय जवानी की शक्ति मौजूद थी, कठिन परिश्रम की शक्ति थी तथा मेरे स्वभाव ऐसा बना है कि मैं प्रत्येक बात पर ख़ुदा को सामर्थ्यवान जानता हूं और वास्तव में उसकी क़ुदरतों का अन्त कौन जान सकता है तथा उसके समक्ष कोई बात अनहोनी नहीं उन बातों के अतिरिक्त जो उसके वादे के विपरीत या उसकी पवित्र शान के विरुद्ध और उसकी तौहीद (एकेश्वरवाद) के विपरीत हैं। अत: मैंने इस अवस्था में भी उन के लिए दुआ करना आरंभ की और मैंने हृदय में संकल्प कर लिया कि मैं तीन बातों में अपनी मारिफ़त अधिक करना चाहता हूं। एक यह कि मैं देखना चाहता हूं कि क्या मैं ख़ुदा के दरबार में इस योग्य हूं कि

मेरी दुआ स्वीकार हो जाए। दूसरी यह कि क्या स्वप्न और इल्हाम जो अज़ाब के वादे के रूप में आते हैं उनमें विलम्ब भी हो सकता है या नहीं। तीसरी यह कि क्या इस श्रेणी का रोगी जिसकी केवल हड्डियां शेष हैं दुआ के द्वारा अच्छा हो सकता है या नहीं। अत: मैंने इस आधार पर दुआ करना आरंभ किया। अत: क़सम है मुझे उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है कि दुआ के साथ ही परिवर्तन आरंभ हो गया तथा इसी बीच मैंने दूसरे स्वप्न में देखा कि वह जैसे अपने दालान में अपने पैरों पर चल रहे हैं और स्थिति यह थी कि दूसरा व्यक्ति करवट बदलता था। जब दुआ करते-करते पन्द्रह दिन गुज़रे तो उनमें स्वस्थ होने के प्रत्यक्ष लक्षण पैदा हो गए और उन्होंने इच्छा प्रकट की कि मेरा हृदय चाहता है कि कुछ कदम चलूं। अत: वह थोड़े से सहारे के साथ उठे और डंडे के सहारे से चलना आरंभ किया और फिर डंडा भी छोड़ दिया। कुछ दिनों में स्वस्थ हो गए। तत्पश्चात् पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहे और फिर स्वर्गवास हो गया।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 253-254, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ 265-266)

"135 वां निशान — एक बार मधुमेह के रोग के कारण जो लगभग बीस वर्ष से मुझे लगा हुआ है, आंखों की दृष्टि के बारे में बहुत आशंका हुई क्योंकि ऐसे रोगों में मोतियाबिंद का बहुत ख़तरा होता है। तब ख़ुदा तआला ने अपनी कृपा एवं उपकार से मुझे अपनी उस वह्यी से सांत्वना, सन्तोष और आराम प्रदान किया। वह वह्यी यह है —

نزلت الرحمة علٰی ثلٰث۔ العین وعلی الاُخریین

अर्थात् तीन अंगों पर दया उतारी गई। एक आंखें तथा दो अन्य अंग तथा इनकी व्याख्या नहीं की। मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि जैसा कि पन्द्रह बीस वर्ष की आयु में मेरी दृष्टि थी ऐसी

ही इस आयु में भी जो कि लगभग सत्तर वर्ष तक पहुंच गई है वही दृष्टि है। अत: यह वही दया (रहमत) है जिसका वादा ख़ुदा तआला की वह्यी में दिया गया था।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ-306, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-319)

"138 वां निशान — याद रहे कि ख़ुदा के बन्दों की सर्वप्रियता पहचानने के लिए दुआ का स्वीकार होना भी एक बड़ा निशान होता है अपितु दुआ की स्वीकारिता के समान और कोई भी निशान नहीं क्योंकि दुआ की स्वीकारिता से सिद्ध होता है कि एक बन्दे का ख़ुदा के दरबार में मान-सम्मान है। यद्यपि दुआ का स्वीकार हो जाना हर जगह अनिवार्य नहीं, कभी-कभी महावैभवशाली ख़ुदा अपनी इच्छा भी धारण करता है परन्तु इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि ख़ुदा के मान्य बन्दों के लिए यह भी एक निशानी है कि दूसरों की अपेक्षा उनकी दुआएं बड़ी प्रचुरता के साथ स्वीकार होती हैं और दुआ के स्वीकार होने की श्रेणी में कोई उनका मुक़ाबला नहीं कर सकता और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कह सकता हूं कि मेरी हज़ारों दुआएं स्वीकार हुई हैं। यदि मैं सब को लिखूं तो एक बड़ी किताब हो जाए।"

(परिशिष्ट हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ-68, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-503)

"डाक्टर जॉन इलेग्ज़ण्डर डोई अमरीका का झूठा नबी मेरी भविष्यवाणी के अनुसार मर गया"

निशान नं. 196 — स्पष्ट हो कि यह व्यक्ति जिस का नाम शीर्षक में उल्लेख किया गया है इस्लाम का कट्टर विरोधी था तथा इसके अतिरिक्त उसने रसूल होने का झूठा दावा किया था और हज़रत सय्यिदुल अंबिया, सत्यनिष्ठों में सर्वाधिक सत्यनिष्ठ, रसूलों में सर्वश्रेष्ठ और पवित्रात्मा पुरुषों के इमाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम को झूठा और झूठ बनाने वाला समझता था और अपनी दुष्टता से गन्दी गालियां तथा आप[स.] को अश्लील शब्दों से याद करता था। इसलिए गंभीर धर्म से द्वेष के कारण उसके अन्दर बहुत ही गन्दी आदतें मौजूद थीं और जैसा कि सुअरों के आगे मोतियों का कुछ महत्त्व नहीं ऐसा ही वह इस्लाम की तौहीद (एकेश्वरवाद) बहुत ही तिरस्कार की दृष्टि से देखता था और उसका विनाश चाहता था, हज़रत ईसा को ख़ुदा जानता था तथा तीन ख़ुदा होने की आस्था को सम्पूर्ण विश्व में फैलाने के लिए इतना जोश रखता था कि मैंने इसके बावजूद कि पादरियों की सैकड़ों किताबें देखीं परन्तु ऐसा जोश किसी में न पाया।"

(परिशिष्ट हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ-69, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ 504-505)

"चूंकि मेरा मूल कार्य सलीब का खंडन है। अत: उसकी मृत्यु से सलीब का एक बड़ा भाग टूट गया, क्योंकि वह सम्पूर्ण विश्व से प्रथम श्रेणी का सलीब का समर्थक था जो रसूल होने का दावा करता था और कहता था कि मेरी दुआ से समस्त मुसलमान तबाह हो जाएंगे और इस्लाम मिट जाएगा ख़ाना का'बा वीरान हो जाएगा। अत: ख़ुदा तआला ने मेरे हाथ पर उसका विनाश किया। मैं जानता हूं कि उसकी मौत से सुअर का वध करने वाली भविष्यवाणी बड़ी स्पष्टता के साथ पूरी हो गई। क्योंकि ऐसे व्यक्ति से अधिक ख़तरनाक कौन हो सकता है जिसने झूठे तौर पर रसूल होने का दावा किया और सुअर की भांति झूठ की गन्दगी खाई और जैसा कि वह स्वयं लिखता है उसके साथ एक लाख के लगभग ऐसे लोग हो गए थे जो बड़े धनवान थे अपितु सच यह है कि 'मुसैलिमा कज़्ज़ाब' और 'अस्वद अन्सी' का अस्तित्व उसके मुकाबले पर कुछ भी न था। न उसके समान उसकी ख्याति थी,

न उसके समान करोड़ों रुपयों के मालिक थे। अत: मैं क़सम खा सकता हूं कि यह वही सुअर था जिसके वध की आंहज़रत[स.अ.व.] ने सूचना दी थी कि मसीह मौऊद के हाथ पर मारा जाएगा।"

(परिशिष्ट हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ-77, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-513)

तीसरी बार तीन हज़ार रुपए का इनामी विज्ञापन

आप[अ.] आथम के बारे में फ़रमाते हैं कि :-

"वह सार्वजनिक तौर पर हमारी उपस्थिति के समय स्पष्ट शब्दों में क़सम खा जाएं कि मैं भविष्यवाणी की निर्धारित अवधि में इस्लाम की ओर लेशमात्र भी नहीं लौटा और न इस्लामी सच्चाई और श्रेष्ठता ने मेरे हृदय पर कोई भयावह प्रभाव डाला और न इस्लामी भविष्यवाणी के रूहानी भय ने मेरे हृदय को तनिक भी पकड़ा अपितु मैं मसीह की ख़ुदाई, उसके पुत्र होने तथा कफ़्फ़ारे पर पूरा विश्वास रखता रहा और यदि मैं वास्तविकता के विरुद्ध कहता हूं और वास्तविकता को छिपाता हूं तो हे सामर्थ्यवान ख़ुदा मुझे एक वर्ष के अन्दर मृत्यु के ऐसे अज़ाब से मिटा दे जो झूठों पर उतरना चाहिए। यह क़सम है जिस की हम उनसे मांग करते हैं तथा जिसके लिए हम विज्ञापन प्रकाशित करते-करते आज तीन हज़ार तक पहुचे हैं। हम क़सम खाकर कहते हैं कि हम कानूनी तौर पर अर्थात् शर्तों के अनुसार 9 दिसम्बर 1894 ई. दस्तावेज़ लिखवा कर यह तीन हज़ार रुपए क़सम खाने से पूर्व देंगे और बाद में क़सम लेंगे ..... क्या किसी को आशा है कि अब वे क़सम खाने के लिए मैदान में आएंगे। **कदापि नहीं, कदापि नहीं** वे तो झूठ की मौत से मर गए **अब क़ब्र से कैसे निकलेंगे।"**

(इनामी इश्तिहार तीन हज़ार पृष्ठ-203, तीसरी बार, मजमुआ इश्तिहारात जिल्द-द्वितीय, पृष्ठ 66-67, प्रकाशित - अश्शिर्कतुल इस्लामिया रबवाह)

तजल्लियात-ए-इलाहिया

(ख़ुदा तआला की झलकियां)

"ये हैं हमारे विरोधी मौलवियों के एतिराज़ जिन्होंने क़ुर्आन और हदीस का ज्ञान पढ़कर डुबो दिया। उन्हें अब तक मालूम नहीं कि दण्ड के वादे की भविष्यवाणी तथा वादे की भविष्यवाणी में अन्तर क्या है?

..... आथम की घटना के पश्चात् जो भविष्यवाणी लेखराम के बारे में की गई थी जिसके साथ कोई भी शर्त न थी और जिसमें स्पष्ट तौर पर समय और मृत्यु की क़सम बताई गई थी उसी पर विचार करते कि कैसी सफाई के साथ वह पूरी हुई। किन्तु कौन विचार करे जब द्वेष से हृदय अंधे हो गए और यदि हृदयों में लेशमात्र भी इन्साफ़ होता तो उनके लिए एक अत्यन्त आसान उपाय उपलब्ध था कि जिन भविष्यवाणियों के पूर्ण न होने पर उनको आपत्ति है वह लिख कर मेरे सामने प्रस्तुत करते कि वे कितनी हैं और फिर मुझ से इस बात का प्रमाण लेते कि वे भविष्यवाणियां जो पूरी हो गईं वे कितनी हैं तो इस परीक्षा से उनके समस्त पर्दे खुल जाते और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि उनके पास दण्ड के वादे की एतिराज़ की एक या दो भविष्यवाणियां हैं जिन के साथ शर्त भी थी जिन में भय और डर के कारण विलम्ब हो गया तथा जिन के बारे में ख़ुदा तआला का अनश्वर क़ानून है कि वह पश्चाताप, क्षमायाचना, दान और दुआ से टल सकती हैं।

(तजल्लियात-ए-इलाहिया पृष्ठ 17-19, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20, पृष्ठ 406-408)

"मेरे नादान विरोधियों को ख़ुदा दिन-प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के निशान दिखा कर अपमानित करता जाता है और मैं उसी की क़सम खाकर कहता हूं कि जैसा कि उसने इब्राहीम[अ.] से वार्तालाप और

संबोधन किया और फिर इस्हाक़[अ.], इस्माईल[अ.], याक़ूब[अ.], यूसुफ़[अ.], मूसा[अ.], मसीह इब्ने मरयम[अ.] और सब के पश्चात् हमारे नबी[स.अ.व.] से ऐसा वार्तालाप किया कि आप पर सब से अधिक प्रकाशमान एवं पवित्र वह्यी उतारी, इसी प्रकार उसने मुझे भी अपने वार्तालाप एवं सम्बोधन से सम्मानित किया परन्तु यह सम्मान मुझे केवल आंहज़रत[स.अ.व.] के अनुसरण से प्राप्त हुआ, किन्तु मैं आंहज़रत[स.अ.व.] की उम्मत न होता और आपका अनुसरण न करता तो यदि संसार के समस्त पर्वतों के बराबर मेरे कर्म होते तो फिर भी मैं कभी यह वार्तालाप एवं सम्बोधन का सम्मान कदापि न पाता क्योंकि अब मुहम्मदी नुबुव्वत के अतिरिक्त सब नुबुव्वतें बन्द हैं। शरीअत वाला नबी कोई नहीं आ सकता और बिना शरीअत के नबी हो सकता है परन्तु वही जो पहले उम्मती हो।"

(तजल्लियात-ए-इलाहिया पृष्ठ 24-25, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20, पृष्ठ 411-412)

सिराजे मुनीर

हमारे हृदय की इस समय विचित्र दशा है। दर्द भी है और ख़ुशी भी। दर्द इसलिए कि यदि लेखराम लौटता यदि अधिक नहीं तो इतना ही करता कि गालियां देने से रुक जाता तो मुझे अल्लाह तआला की क़सम है कि मैं उसके लिए दुआ करता और मैं आशा रखता था कि यदि वह टुकड़े-टुकड़े भी किया जाता तब भी जीवित हो जाता। वह ख़ुदा जिसको मैं जानता हूं उस से कोई बात अनहोनी नहीं और ख़ुशी इस बात की है कि भविष्यवाणी अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक पूरी हुई।"

(सिराजे मुनीर पृष्ठ 24, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-12, पृष्ठ 28)

"बारहवीं भविष्यवाणी जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 238, 239 में लिखी गई है **क़ुर्आन का ज्ञान** है। उस भविष्यवाणी का निष्कर्ष यह

है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुझ को क़ुर्आन का ज्ञान दिया गया है, ऐसा ज्ञान जो असत्य को मिटाएगा तथा उसी भविष्यवाणी में फ़रमाया कि दो लोग हैं जिनको बहुत ही बरकत दी गई। एक वह शिक्षक जिसका नाम **मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम** और एक यह **शिष्य** अर्थात् इस किताब का लेखक और यह इस आयत की ओर भी संकेत है जो पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ

अर्थात् इस नबी के अन्य शिष्य भी हैं जो अभी प्रकट नहीं हुए तथा अन्तिम युग में उनका प्रकटन होगा। यह आयत इसी ख़ाकसार की ओर संकेत है। क्योंकि जैसा कि अभी इल्हाम में वर्णन हो चुका है यह ख़ाकसार रूहानी तौर पर आंहज़रत[स.अ.व.] के शिष्यों में से है और यह भविष्यवाणी जो क़ुर्आन की शिक्षा की ओर संकेत करती है उसी की पुष्टि के लिए 'करामातुस्सादिक़ीन' पुस्तक लिखी गई थी जिस की ओर किसी विरोधी ने ध्यान नहीं दिया और मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिस के हाथ में मेरी जान हे कि मुझे क़ुर्आन की वास्तविकता एवं अध्यात्म ज्ञान के समझने में **प्रत्येक रूह पर विजय प्रदान की गई है** और यदि कोई विरोधी मेरे मुकाबले पर आता जैसा कि मैंने क़ुर्आन की तफ़्सीर (व्याख्या) के लिए उन्हें बार-बार बुलाया तो ख़ुदा उसको अपमानित और लज्जित करता। अत: क़ुर्आन का 'बोध' जो मुझे दिया गया है यह अल्लाह तआला का एक **निशान** है।"

(सिराजे मुनीर पृष्ठ 34-35, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-12, पृष्ठ 40-41)

बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 227 में एक आर्य के बारे में एक भविष्यवाणी है जिसका नाम **मलावामल** है वह अभी तक जीवित है।

यह व्यक्ति यक्ष्मा के रोग में ग्रस्त हो गया था। एक दिन वह मेरे पास आकर तथा अपने जीवन से निराश होकर बहुत बेचैनी से रोया। मुझे याद पड़ता है कि उसने उस दिन एक भयावह स्वप्न भी देखा था। जहां तक मुझे याद है स्वप्न यह था कि उसे एक ज़हरीले सांप ने काटा है और सम्पूर्ण शरीर में ज़हर फैल गया है। इस स्वप्न ने उसको नितान्त शोकग्रस्त कर दिया था और पहले से एक ज्वर ने जो भोजन करने के पश्चात् तीव्र हो जाता था उसे बहुत घबराहट में डाला हुआ था। इसलिए वह बेचैनी और लगभग निराशा की स्थिति में था। वह मेरे पास आकर रोया। इसलिए मेरा हृदय उसकी स्थिति पर नर्म हुआ और मैंने ख़ुदा के दरबार में उस आर्य के पक्ष में दुआ की जैसा कि उस पहले आर्य के पक्ष में दुआ की थी जिसका नाम शरमपत है। तब मुझे इल्हाम हुआ जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 227 में मौजूद है - قُلْنَا يَا نَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ سَلَامًا अर्थात् हमने ज्वर की अग्नि को कहा कि शीतल और शान्त हो। अत: उसी समय उसे कि वह मौजूद था इस इल्हाम की सूचना दी गई और कई लोगों को सूचित किया गया कि वह मेरी दुआ की बरकत से अवश्य स्वस्थ हो जाएगा। अत: तत्पश्चात् एक सप्ताह नहीं गुज़रा था कि वह आर्य ख़ुदा की कृपा से स्वस्थ हो गया।

..... मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि यह घटना बिल्कुल सच है तथा इसमें थोड़ी सी भी अतिशयोक्ति नहीं।"

(सिराजे मुनीर पृष्ठ 53-54, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-12, पृष्ठ-62)

हम जब इन्साफ़ की दृष्टि से देखते हैं तो नुबुव्वत के सम्पूर्ण सिलसिले में से उत्तम श्रेणी का महापुरुष नबी और जीवित नबी, ख़ुदा का सर्वोत्तम प्रिय नबी केवल एक पुरुष को जानते हैं अर्थात् वही नबियों का सरदार, रसूलों का गर्व, समस्त भेजे हुओं का मुकुट जिस

का नाम मुहम्मद मुस्तफ़ा व अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है जिस की छत्र छाया में दस दिन चलने से वह प्रकाश मिलता है जो इस से पूर्व हज़ार वर्ष तक नहीं मिल सकता था। वे कैसी किताबें हैं जो हमें भी यदि हम उनके अधीन हों तो धिक्कृत, अपमानित तथा निष्ठुर करना चाहती हैं। क्या उनको जीवित नुबुव्वत कहना चाहिए जिन की छाया से हम स्वयं मुर्दा हो जाते हैं। निश्चय ही समझो कि ये सब मुर्दे हैं। क्या मुर्दे को मुर्दा प्रकाश प्रदान कर सकता है। यसू की उपासना करना केवल एक मूर्ति की उपासना करना है। मुझे क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि यदि वह मेरे युग में होता तो उसे विनम्रतापूर्वक मेरी गवाही देनी पड़ती। कोई उसको स्वीकार करे या न करे परन्तु यही सच है और सच में बरकत है कि अन्तत: उस का प्रकाश संसार पर पड़ता है।

(सिराजे मुनीर पृष्ठ 72-73, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-12, पृष्ठ-82)

बरकातुद्दुआ

"इस समय मैं मात्र ख़ुदा के लिए सय्यिद साहिब की सेवा में अपनी व्यक्तिगत गवाही प्रस्तुत करता हूं। कदाचित् ख़ुदा तआला उन पर कृपा करे। अत: हे प्रिय सय्यिद ! मुझे उस महावैभवशाली ख़ुदा की क़सम है कि यह बात वास्तव में सही है कि वह्यी आकाश से हृदय पर गिरती है जैसे कि सूर्य की किरण दीवार पर। मैं प्रतिदिन देखता हूं कि जब ख़ुदा से वार्तालाप का समय आता है तो प्रथम एक बार मुझ पर एक ऊंघ छा जाती है। तब मैं एक परिवर्तित वस्तु के समान हो जाता हूं और मेरी ज्ञानेन्द्रिय और मेरी समझ और होश बात करने के लिए शेष होता है किन्तु उस समय मैं देखता हूं कि जैसे एक

अत्यन्त शक्तिशाली अस्तित्व ने मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को अपनी मुट्ठी में ले लिया है और उस समय महसूस करता हूं कि मेरे अस्तित्व की समस्त नाड़ियां उसके हाथ में हैं और जो कुछ मेरा है वह मेरा नहीं अपितु उसका है।"

(बरकातुद्दुआ पृष्ठ 31, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-6, पृष्ठ 36)

सनातन धर्म

"यदि मौलवी अहमद हसन इस विज्ञापन के प्रकाशित होने के पश्चात् जिसको वह क़सम के साथ प्रकाशित करेगा अमरोहा को ताऊन (प्लेग) से बचा सका और कम से कम तीन जाड़े शान्तिपूर्वक गुज़र गए तो मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं। अत: इस से बढ़कर और क्या निर्णय होगा और मैं भी ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं मसीह मौऊद हूं और वही हूं जिसका नबियों ने वादा दिया है तथा मेरे और मेरे युग के बारे में तौरात, इंजील तथा पवित्र क़ुर्आन में ख़बर मौजूद है कि उस समय आकाश पर चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण होगा और पृथ्वी पर भयंकर ताऊन आएगी और मेरा यही निशान है।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-19, दाफ़िउल बला व मै'आर अहलिल इस्तिफ़ा शीर्षक ताऊन पृष्ठ 18)

"मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि यही सच बात है कि ख़ुदा का कलाम (वाणी) समझने के लिए प्रथम हृदय को कामवासना संबंधी आवेग से पवित्र बनाना चाहिए। तब ख़ुदा की ओर से हृदय पर प्रकाश उतरेगा। आन्तरिक प्रकाश के अभाव में मूल वास्तविकता दिखाई नहीं देती। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला का कथन

है - لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ अर्थात् यह पवित्र कलाम है जब तक कोई पवित्र न हो जाए वह उसके भेदों तक नहीं पहुंचेगा।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-19, पृष्ठ 473-474, सनातन धर्म पृष्ठ-6)

हाशिया अरबईन

"खेद कि ज्ञान के निशान के मुकाबले में मूर्ख लोगों ने पीर महर अली शाह गोलड़वी के बारे में अकारण झूठी विजय का नगाड़ा बजा दिया और मुझे गन्दी गालियां दीं। मुझे उसके मुकाबले पर अनपढ़ और मूर्ख ठहराया। जैसे मैं उसके रोब के नीचे आकर डर गया अन्यथा वह साहिब तो सच्चे हृदय के साथ मुकाबले पर अरबी तफ़्सीर लिखने के लिए तैयार हो गए थे और इसी नीयत से लाहौर आए थे। किन्तु मैं आपके व्यक्तित्व की महत्ता और प्रताप को देखकर भाग गया। हे आकाश झूठों पर ला'नत कर आमीन। प्यारे दर्शको ! झूठे को अपमानित करने के लिए उसी समय जो 7 दिसम्बर 1900 ई. दिन जुमा है ख़ुदा ने मेरे हृदय में एक बात डाली है और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं जिसका नर्क झूठों के लिए भड़क रहा है कि मैंने झुठलाने की अधिकता को देखकर स्वयं उस विलक्षण मुकाबले के लिए निवेदन किया था और यदि पीर महर अली शाह साहिब शास्त्रीय मुकाबले और उसके साथ बैअत की शर्त प्रस्तुत न करते जिससे मेरा उद्देश्य पूर्णतया समाप्त हो गया था तो यदि लाहौर और क़ादियान में बर्फ़ के पहाड़ भी होते और जाड़े के दिन होते तो मैं फिर भी लाहौर पहुंचता और उन्हें दिखाता कि आकाशीय निशान इसको कहते हैं।"

(हाशिया अरबईन न. 4, पृष्ठ 17-18, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-18, पृष्ठ 448-449)

ज़मीमा रिसाला अन्जामे आथम

"अत: एक संयमी मनुष्य के लिए यह पर्याप्त था कि ख़ुदा ने मुझे झूठ घड़ने वालों की भांति तबाह नहीं किया अपितु मेरे प्रत्यक्ष और मेरे आन्तरिक तथा मेरे शरीर और रूह पर वे उपकार किए जिन को मैं गिन नहीं सकता। मैं जवान था जब ख़ुदा की वह्यी और इल्हाम का दावा किया और अब मैं बूढ़ा हो गया और दावे के आरंभ पर बीस वर्ष से भी अधिक समय गुज़र गया। मेरे बहुत से मित्र और संबंधी जो मुझ से छोटे थे मृत्यु पा गए और मुझे उसने लम्बी आयु प्रदान की तथा प्रत्येक संकट में मेरा अभिवादन तथा देख-रेख करने वाला रहा। अत: क्या उन लोगों के यही निशान हुआ करते हैं जो ख़ुदा तआला पर झूठ बांधते हैं। अब भी यदि मौलवी लोग मुझे झूठ घड़ने वाला समझते हैं तो इससे बढ़कर एक और फ़ैसला है और वह यह है कि मैं उन इल्हामों को हाथ में लेकर जिनको मैं प्रकाशित कर चुका हूं मौलवी लोगों से मुकाबला करूं।

इस प्रकार से कि मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहूं कि मैं वास्तव में उसी के वार्तालाप एवं सम्बोधन से सम्मानित हूं और वास्तव में उसी ने मुझे चौदहवीं सदी के सर पर भेजा है ताकि मैं उस फित्ने को दूर करूं जो इस्लाम के विरुद्ध सब से बड़ा फित्न: है और उसी ने मेरा नाम ईसा रखा है तथा सलीब के तोड़ने के लिए मुझे भेजा है परन्तु किसी शारीरिक प्रहार से नहीं।"

(अंजामे आथम पृष्ठ-30, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-11, पृष्ठ-314)

छठे - और यदि इन बातों में से कोई भी न करें तो मुझ से और मेरी जमाअत से सात वर्ष तक इस प्रकार से संधि कर लें कि काफ़िर

कहने, झूठा कहने तथा अपशब्द निकालने से मुंह बन्द रखें तथा प्रत्येक को प्रेम और शिष्टाचार से मिलें और ख़ुदा के प्रकोप से भयभीत होकर मिलने में मुसलमानों के स्वभाव के तौर पर आचरण करें। प्रत्येक प्रकार के उपद्रव और दुष्टता को त्याग दें। इसलिए यदि इन सात वर्ष में मेरी ओर से ख़ुदा तआला के समर्थन से इस्लाम की सेवा में विशेष प्रभाव प्रकट न हों और जैसा कि मसीह के हाथ से अपनी आस्थाओं को छोड़ चुके धर्मों का मर जाना आवश्यक है। यह मृत्यु झूठे धर्मों पर मेरे द्वारा प्रकट न हो अर्थात् ख़ुदा तआला मेरे हाथ से वे निशान प्रकट न करे जिन से इस्लाम की ख्याति हो तथा जिस से चारों ओर से इस्लाम में सम्मिलित होना आरंभ हो जाए और ईसाइयत का झूठा उपास्य समाप्त हो जाए तथा संसार अन्य रूप धारण न कर ले तो मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं स्वयं को झूठा स्वीकार कर लूंगा और ख़ुदा जानता है कि मैं कदापि झूठा नहीं।"

(परिशिष्ट अंजामे आथम पृष्ठ 27 से 35, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-11, पृष्ठ-311 से 319)

इसलिए उचित है कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी तथा अब्दुल जब्बार जो अपनी शरारत और दुष्टता एवं गालियों पर ज़ोर दे रहे हैं, अपने स्वर्गवासी बुज़ुर्ग के वाक्यों को अवश्य देख लें। ऐसा न हो कि उनकी वसीयत की अवज्ञा करके उन के आक़ (माता-पिता का बहिष्कृत) भी ठहर जाएं। उस बुज़ुर्ग मौलवी अब्दुल्लाह ने अपने जीवन के युग में मेरे नाम भी दो पत्र भेजे थे और उन पत्रों में क़ुर्आनी आयतों के इल्हाम के साथ मुझे ख़ुशख़बरी दी थी कि तुम काफिरों पर विजयी रहोगे और फिर मृत्योपरान्त मुझ पर प्रकट किया था कि मैं आपके दावे का सत्यापन करने वाला हूं। अत: मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि उन्होंने मेरे दावे को सुनकर सत्यापन किया और स्पष्ट

शब्दों में मुझे कहा कि — "जब मैं संसार में था तो मैं आशा रखता था कि ऐसा व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर से प्रकट होगा।"

ये उनके शब्द हैं और झूठों पर ख़ुदा की ला'नत।

(परिशिष्ट अंजामे आथम पृष्ठ-59, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-11, पृष्ठ-343)

पुस्तक आस्मानी फ़ैसला

"अत: स्पष्ट हो कि मियां नज़ीर हुसैन ने संयम और ईमानदारी के मार्ग को बिल्कुल त्याग दिया। मैंने देहली में तीन विज्ञापन जारी किए तथा अपने विज्ञापनों में बार-बार प्रकट किया कि मैं मुसलमान हूं और इस्लामी आस्था रखता हूं अपितु मैंने अल्लाह तआला की क़सम खाकर सन्देश भेजा कि मेरे किसी लेख या भाषण में कोई ऐसी बात नहीं है जो (ख़ुदा की शरण चाहते हैं) इस्लामी आस्था के विपरीत हो। एतिराज़ करने वालों का अपना ही बोधभ्रम है अन्यथा मैं इस्लाम की सम्पूर्ण आस्थाओं पर पूर्णरूप से ईमान रखता हूं और इस्लामी आस्था के विपरीत से पृथक हूं।"

(आस्मानी फ़ैसला पृष्ठ-3, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-4, पृष्ठ-312)

आपने इस रूहानी मुक़ाबले के लिए समस्त सूफ़ियों, पीरज़ादों और गद्‌दी नशीनों तथा समस्त उलेमा को भी जिन्होंने आप पर कुफ़्र का फ़त्वा लगाया था, मुकाबले के लिए बुलाया और कहा —

"मैं इक़रार करता हूं और अल्लाह तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि यदि मैं इस मुक़ाबले में पराजित हो गया तो अपने सच पर न होने का इक़रार प्रकाशित कर दूंगा ..... और इसी जल्से में इक़रार भी कर दूंगा कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हूं और मेरे

समस्त दावे झूठे हैं और ख़ुदा की क़सम मैं विश्वास रखता हूं तथा देख रहा हूं कि मेरा ख़ुदा कदापि ऐसा नहीं करेगा और मुझे कभी नष्ट नहीं होने देगा।"

(आस्मानी फ़ैसला पृष्ठ-13, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-4, पृष्ठ-330)

हमामतुल बुश्रा

''وإن إمامی سید الرسل أحمدُ

और निस्सन्देह मेरा पेशवा समस्त रसूलों का सरदार अहमद है।

رضیناه متبوعا وربّی ینظُرُ

मैं राज़ी हूं उसकी आज्ञाकारिता पर और मेरा ख़ुदा देखता है।

وواللہ إنی قد تبِعتُ محمّدًا

क़सम है मुझे अल्लाह की मैं मुहम्मद[स.अ.व.] का आज्ञाकारी हूं।

وفی کل آن مِن سناه أُنوَّرُ

तथा प्रतिपल उस से प्रकाश प्राप्त करता हूं।"

(हमामतुल बुश्रा पृष्ठ 106-107, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-7, पृष्ठ 331-332)

सुर्मा चश्म आर्य

"हम सच-सच कहते हैं तथा अधिक बातों में समय नष्ट करना नहीं चाहते कि जो कुछ पवित्र क़ुर्आन के दस पन्नों से तौहीद (एकेश्वरवाद) के मआरिफ़ संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्य के समान प्रकट होते हैं। यदि कोई व्यक्ति वेद के हज़ारों पन्नों से भी निकाल कर दिखा दे तो फिर भी हम मान जाएं कि हां वेद में

एकेश्वरवाद (तौहीद) है और हम से जो चाहे यथासामर्थ्य शर्त के तौर पर निर्धारित भी करा ले। हम क़सम खाकर वर्णन करते हैं और एक ख़ुदा जिसका कोई भागीदार नहीं की क़सम खाकर कहते हैं कि हम बहरहाल निर्धारित शर्त की अदायगी पर जिस प्रकार से फ़ैसला करना चाहें उपस्थित हैं परन्तु दर्शक भलीभांति स्मरण रखें तथा हे आर्यों के नवयुवक एवं नवसम्मिलित होने वालो ! तुम भी स्मरण रखो कि वेद में कदापि शुद्ध एकेश्वरवाद नहीं है, वह जगह-जगह अनेकेश्वरवादी शिक्षा से मिश्रित है अवश्य मिश्रित है कोई उसे बरी नहीं कर सकता और समय आता जाता है कि उसके समस्त पर्दे खुल जाएं। अत: तुम लोग उस ख़ुदा से डरो जिसकी अदालत से किसी भी प्रकार से छिप नहीं सकते।"

(सुर्मा चश्म आर्य पृष्ठ-168, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-2, पृष्ठ-216)

"ख़ुदा की प्रशंसा और स्तुति के पश्चात् एक एवं स्वच्छन्द ख़ुदा का बन्दा अहमद पुत्र स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब (जो लेखक बराहीन अहमदिया हूं) हज़रत ख़ुदावन्द जो महावैभवशाली और नाम वाला है की क़सम खा कर कहता हूं कि मैंने अपनी प्रिय आयु का अधिकांश भाग धर्म के अनुसंधान में व्यय करके सिद्ध कर लिया है कि संसार में सच्चा और ख़ुदा की ओर से धर्म इस्लाम धर्म है तथा हज़रत सय्यिदिना मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] ख़ुदा तआला के रसूल एवं सर्वश्रेष्ठ रसूल हैं और पवित्र क़ुर्आन अल्लाह तआला का पवित्र एवं पूर्ण कलाम है जो समस्त पवित्र सच्चाइयों पर आधारित है तथा जो कुछ उस पवित्र कलाम (वाणी) में वर्णन किया गया है कि अल्लाह तआला अपनी व्यक्तिगत अनिवार्यता और अनादि अस्तित्व, पूर्ण क़ुदरत तथा अपनी अन्य विशेषताओं में एक और भागीदार रहित है तथा समस्त सृष्टियों

का स्रष्टा और समस्त रूहों और शरीरों का पैदा करने वाला है, सच्चे, वफ़ादार ईमानदारों को अनश्वर मोक्ष प्रदान करेगा और वह कृपालु एवं दयालु और पश्चाताप स्वीकार करने वाला है। इस प्रकार ख़ुदा की अन्य विशेषताएं एवं अन्य शिक्षाएं जो पवित्र क़ुर्आन में लिखी हैं यह सब सही और उचित है और मैं हार्दिक विश्वास से उन सब बातों को सच मानता हूं और पूर्ण रूप से उन पर विश्वास रखता हूं।"

(सुर्मा चश्म आर्य पृष्ठ 252-253, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-2, पृष्ठ 302, 303)

चश्मए मसीही

"मुझे उस हस्ती की क़सम है जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि मैं अपने पवित्र ख़ुदा के निश्चित और विश्वसनीय वार्तालाप से सम्मानित हूं और लगभग प्रतिदिन सम्मानित होता हूं तथा वह ख़ुदा जिसे यसू मसीह कहता है कि तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया। मैं देखता हूं कि उसने मुझे नहीं छोड़ा।"

(चश्मए मसीही पृष्ठ-3, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20, पृष्ठ 353)

नसीम-ए-दा'वत

हे सज्जनो ! मुसलमानों की यह आस्था नहीं है कि अर्श कोई भौतिक (शारीरिक) और पैदा की हुई वस्तु है जिस पर ख़ुदा बैठा हुआ है। सम्पूर्ण क़ुर्आन को प्रारंभ से अन्त तक पढ़ो उसमें कदापि नहीं पाओगे कि अर्श भी कोई वस्तु सीमित और पैदा की हुई है। ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन में बारम्बार कहा है कि प्रत्येक वस्तु जो कोई अस्तित्व रखती है उसका स्रष्टा मैं ही हूं। मैं ही पृथ्वी तथा आकाश, रूहों तथा उनकी समस्त शक्तियों का स्रष्टा हूं। मैं अपने अस्तित्व में स्वयं

स्थापित हूं और प्रत्येक वस्तु मेरे साथ स्थापित है, प्रत्येक कण तथा प्रत्येक वस्तु जो मौजूद है वह मेरी ही पैदा की हुई है। परन्तु कहीं नहीं कहा कि अर्श भी कोई भौतिक वस्तु है जिसका मैं स्रष्टा हूं। यदि कोई आर्य पवित्र क़ुर्आन से निकाल दे कि अर्श कोई भौतिक तथा पैदा की हुई वस्तु है तो मैं उसको इससे पूर्व कि क़ादियान से बाहर जाए एक हज़ार रुपया इनाम दूंगा। मैं उस ख़ुदा की क़सम खाता हूं जिसकी झूठी क़सम खाना ला'नती का काम है कि मैं पवित्र क़ुर्आन की वह आयत दिखाते ही हज़ार रुपए उसके सुपुर्द कर दूंगा अन्यथा सम्मानपूर्वक कहता हूं कि ऐसा व्यक्ति स्वयं ला'नत का अधिकारी होगा जो ख़ुदा पर झूठ बोलता है।"

(नसीम-ए-दा'वत पृष्ठ-84, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-19, पृष्ठ 453-454)

नुज़ूलुल मसीह

"चूंकि प्रत्येक वस्तु का स्वामी ख़ुदा है इसलिए वह यह भी अधिकार रखता है कि कोई उत्तम वाक्य किसी पुस्तक का या किसी दीवान का उत्तम शे'र बतौर वह्यी मेरे हृदय पर उतारे। यह तो अरबी भाषा के बारे में वर्णन है परन्तु इससे अधिक आश्चर्य की बात यह है कि कुछ इल्हाम मुझे उन भाषाओं में भी होते हैं जिन का मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं जैसे अंग्रेज़ी या संस्कृत या इब्रानी इत्यादि। जैसा कि बराहीन अहमदिया में उनका कुछ नमूना लिखा गया है और मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि मेरे साथ अल्लाह तआला का यही स्वभाव है और यह निशानों के प्रकारों में से एक निशान है जो मुझे दिया गया है।"

(नुज़ूलुल मसीह पृष्ठ-57, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-18, पृष्ठ-435)

मैंने पहले भी इस निम्नलिखित इक़रार को अपनी पुस्तकों में लोगों पर क़सम के साथ प्रकट किया है और अब ख़ुदा तआला की क़सम खाकर लिखता हूं जिसके क़ब्ज़े में मेरे प्राण हैं कि मैं वही मसीह मौऊद हूं जिसकी रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने उन हदीसों में सूचना दी है जो सही बुख़ारी, मुस्लिम तथा अन्य सही हदीसों की पुस्तकों में दर्ज है। अल्लाह तआला पर्याप्त साक्षी है।

(लेखक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अफ़ल्लाहो अन्हो 17 अगस्त 1899 ई.)

(अक़ायदे अहमदियत से उद्धृत पृष्ठ-134)

"मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसने मुझे भेजा है और जिस पर झूठ बांधना ला'नती लोगों का काम है कि उसने मुझे मसीह मौऊद बना कर भेजा है और मैं जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की आयतों पर ईमान रखता हूं उसी प्रकार एक कण का अन्तर किए बिना ख़ुदा की उस खुली-खुली वह्यी पर ईमान लाता हूं जो मुझे हुई जिसकी सच्चाई उसके निरन्तर निशानों से मुझ पर खुल गई है और मैं बैतुल्लाह में खड़े होकर यह क़सम खा सकता हूं कि वह पवित्र वह्यी जो मुझ पर उतरती है वह उसी ख़ुदा का कलाम (वाणी) है जिसने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपना कलाम उतारा था।"

(एक ग़लती का इज़ाला, पृष्ठ-3, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-18, पृष्ठ-210)

करामातुस्सादिक़ीन

"मुझे महावैभवशाली ख़ुदा की क़सम है कि मैं काफ़िर नहीं। ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह मेरी आस्था है और وَلٰكِنْ رَسُولَ اللهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ पर आंहज़रत[स.] के बारे में मेरा ईमान है।

मैं अपने इस बयान के सही होने पर इतनी क़समें खाता हूं जितने ख़ुदा तआला के पवित्र नाम हैं और जितने पवित्र क़ुर्आन के अक्षर हैं तथा जितनी आंहज़रत[स.अ.व.] की ख़ुदा तआला की दृष्टि में विशेषताएं हैं। मेरी कोई भी आस्था अल्लाह और रसूल के कथन के विपरीत नहीं। जो कोई ऐसा विचार करता है स्वयं उसका बोधभ्रम है तथा जो व्यक्ति मुझे अब भी काफ़िर समझता है और काफ़िर कहने से नहीं रुकता वह निस्सन्देह याद रखे कि मरने के पश्चात् उससे पूछा जाएगा मैं महावैभवशाली ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि मेरा ख़ुदा और रसूल पर वह विश्वास है कि यदि इस युग के समस्त ईमानों को तराज़ू के एक पल्ले में रखा जाए और मेरा ईमान दूसरे पल्ले में तो ख़ुदा की कृपा से यही पल्ला भारी होगा।"

(करामातुस्सादिक़ीन पृष्ठ-25, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-7, पृष्ठ-68)

तिरयाक़ुलक़ुलूब

"मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसने मुझे भेजा है कि यदि कोई कठोर हृदय ईसाई, हिन्दू या आर्य मेरे उन पिछले निशानों से जो प्रकाशमान दिन की भांति प्रकट हैं इन्कार भी कर दे तथा मुसलमान होने के लिए कोई निशान चाहे तथा इस बारे में बिना किसी विपरीत बहस के जिसमें दुर्भावना की गंध पाई जाए सादा तौर पर यह इक़रार किसी अख़बार के माध्यम से प्रकाशित कर दे कि वह किसी निशान के देखने से यद्यपि कोई निशान हो परन्तु मानवीय शक्तियों से बाहर हो इस्लाम स्वीकार करेगा तो मैं आशा रखता हूं कि अभी एक वर्ष पूरा न होगा कि वह निशान देख लेगा क्योंकि मैं उस जीवन में से

प्रकाश लेता हूं जो मेरे अनुकरणीय नबी को प्राप्त हुआ है, कोई नहीं जो उसका मुकाबला कर सके।"

(तिरयाक़ुल क़ुलूब पृष्ठ 6-7, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-15, पृष्ठ-140)

"संसार में केवल दो जीवन प्रशंसनीय हैं — (1) एक वह जीवन जो स्वयं जीवित रहने वाला और जीवित रखने वाला तथा वरदान के स्रोत का जीवन है।

(2) - दूसरा वह जीवन जो लाभ पहुंचाने वाला तथा ख़ुदा के दर्शन कराने वाला हो। अत: आओ हम दिखाते हैं कि वह जीवन केवल हमारे नबी[स.अ.व.] का जीवन है जिस पर प्रत्येक युग में आकाश गवाही देता रहा है और अब भी देता है। याद रखो कि जिसमें वरदान देने वाला जीवन नहीं वह मुर्दा है न कि जीवित। मैं उस ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं जिसका नाम लेकर झूठ बोलना बहुत बड़ी नीचता है कि ख़ुदा ने मुझे मेरे महान अनुकरणीय सय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रूहानी अनश्वर जीवन तथा पूर्ण प्रताप और कमाल का यह प्रमाण दिया है कि मैंने उसके अनुसरण और उसके प्रेम से आकाशीय निशानों को अपने ऊपर उतरते हुए तथा हृदय को विश्वास के प्रकाश से भरते हुए पाया और इतने ग़ैबी (परोक्ष के) निशान देखे कि उन खुले-खुले प्रकाशों के माध्यम से मैंने अपने ख़ुदा को देख लिया।"

(तिरयाक़ुल क़ुलूब पृष्ठ 6-7, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-15, पृष्ठ-140)

तुहफ़ा गोलड़विया

"मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं कि उसने मेरे सत्यापन के लिए आकाश पर यह निशान प्रकट किया है और उस समय प्रकट किया है जबकि मौलवियों ने मेरा नाम दज्जाल, कज़्ज़ाब, काफ़िर, और सबसे बड़ा काफ़िर रखा था। यह वही निशान है जिसके बारे में आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में भविष्यवाणी के तौर पर वादा किया गया था और वह यह है —

قُلْ عِنْدِیْ شَهَادَةٌ مِنَ اللّٰهِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُؤْمِنُوْن

قُلْ عِنْدِیْ شَهَادَةٌ مِنَ اللّٰهِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُسْلِمُوْن

अर्थात् उनको कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की एक गवाही है क्या तुम उसको मानोगे फिर उन को कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की एक गवाही है क्या तुम उसको स्वीकार करोगे। याद रहे कि यद्यपि मेरे सत्यापन के लिए ख़ुदा तआला की ओर से बहुत गवाहियां हैं तथा एक सौ से अधिक वे भविष्यवाणियां हैं जो पूरी हो चुकीं जिनके लाखों लोग गवाह हैं परन्तु उस इल्हाम में इस भविष्यवाणी का वर्णन केवल विशेष्य करने के लिए है। अर्थात् मुझे ऐसा निशान दिया गया है जो आदम से लेकर इस समय तक किसी को नहीं दिया गया। अत: में ख़ाना का'बा में खड़े होकर क़सम खा सकता हूं कि यह निशान मेरे सत्यापन के लिए है न कि किसी ऐसे व्यक्ति के सत्यापन के लिए जिस को अभी झुठलाया नहीं गया और जिस पर यह कुफ्र और झुठलाने तथा पाप का शोर नहीं पड़ा और इसी प्रकार मैं ख़ाना का'बा में खड़े होकर क़सम खा कर कह सकता हूं कि इस निशान से सदी (शताब्दी) का निर्धारण हो गया है।"

(तुहफ़ा गोलड़विया, पृष्ठ-33, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-17, पृष्ठ-143)

किताबुलबरिय्यः

मुहम्मद अस्त इमाम व चराग़ बर दो जहां
मुहम्मद अस्त फ़रोज़न्द-ए-ज़मीन व ज़मां
ख़ुदा न गोयमश अज़ तर्से हक़ मगर बख़ुदा
ख़ुदा नुमास्त वुजूदश बराए आलमियां

अनुवाद - मुहम्मद[स.अ.व.] दोनों जगत के इमाम तथा दीपक हैं और पृथ्वी तथा आकाश को प्रकाशित करने वाले हैं। मैं ख़ुदा तआला के भय के कारण आप को ख़ुदा तो नहीं कहता परन्तु ख़ुदा की क़सम आपका अस्तित्व संसार वालों के लिए ख़ुदा के दर्शन कराने वाला है।"

(किताबुलबरिय्यः पृष्ठ-129, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-13, पृष्ठ-157)

("शाने रसूल-ए-अरबी" सम्पादक तथा प्रकाशक मुहम्मद इल्यास अहमदी सैक्रेटरी जमाअत अहमदिया यादगीर से उद्धृत)

अलहकम 31, मई 1902 ई.

"मैं क़सम खाकर कहता हूं कि मेरे हृदय में मूल एवं वास्तविक जोश यही है। अतः सम्पूर्ण प्रशंसाएं और स्तुतियां तथा समस्त उत्तम विशेषताएं आंहज़रत[स.अ.व.] की ओर सम्बद्ध करने। मेरी पूर्णतम ख़ुशी इसी में है तथा मुझे भेजने का मूल उद्देश्य यही है कि संसार में ख़ुदा तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा नबी करीम[स.अ.व.] का सम्मान स्थापित हो। मैं निस्सन्देह जानता हूं कि मेरे बारे में अल्लाह ने जितने प्रशंसनीय वाक्य तथा सम्मानजनक बातें वर्णन की हैं ये भी वास्तव में आंहज़रत[स.अ.व.] की ओर लौटती हैं। इसलिए कि मैं आप[स.] का दास हूं और आप ही नुबुव्वत के दीपक से प्रकाश प्राप्त करने वाला हूं और

स्थायी तौर पर हमारा कुछ भी नहीं। इस कारण मेरी यह ठोस आस्था है कि यदि कोई व्यक्ति आंहज़रत[स.अ.व.] के पश्चात् यह दावा करे कि मैं स्थायी तौर पर नबी[स.अ.व.] से वरदान प्राप्त किए बिना रसूल हूं और ख़ुदा तआला से संबंध रखता हूं तो वह धिक्कृत और तिरस्कृत है। ख़ुदा तआला की स्थायी मुहर लग चुकी है इस बात पर कि कोई व्यक्ति अल्लाह की ओर पहुंचने के द्वार से आंहज़रत[स.अ.व.] के अनुसरण के बिना आ नहीं सकता।"

(अलहकम 31, मई 1902 ई.)

अहमदिया ता'लीमी पॉकिट बुक (भाग प्रथम)

(लेखक - क़ाज़ी मुहम्मद नज़ीर साहिब फ़ाज़िल)

अल्लाह तआला क़ुर्आन में यहूदियों को संबोधित करते हुए फ़रमाता है :-

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (सूरह अल जुमअः 7)

अनुवाद - हे रसूल कह दे हे लोगो ! जो यहूदी हुए। यदि तुम्हारा यह दावा है कि तुम अल्लाह के प्रिय हो सिवाए उन लोगों के (जो मुसलमान हैं) तो तुम मृत्यु की अभिलाषा करो यदि तुम सच्चे हो।

इस आयत से स्पष्ट है कि मौत की अभिलाषा करने वाला यदि उस अभिलाषा के पश्चात् शीघ्र मरने से बच जाए तो यह मामला इस बात की सच्चाई पर गवाह होगा। यदि कोई बोधभ्रम से स्वयं को ख़ुदा का प्रिय समझता हो और मौत की अभिलाषा कर बैठे तो फिर उसकी मौत निशान बन जाती है। जैसे अबू जहल ने बद्र के युद्ध में यह अभिलाषा की कि हे ख़ुदा हम दोनों में से जो झूठा है उसको इसी स्थान

में मौत दे दे। अत: वह बद्र के युद्ध में मारा गया और उसकी मौत इस्लाम की सच्चाई का निशान बन गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को झूठा समझते हुए और मुकाबले में स्वयं को सच्चा समझते हुए जिन-जिन लोगों ने आप के लिए बद्-दुआ की तथा आप के सच्चा होने की स्थिति में स्वयं अपनी मौत चाही वे सब के सब तबाह हुए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि आप[स.] ख़ुदा तआला की ओर से हैं, ख़ुदा के दरबार में यह दुआ की —

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

रब्बनफ़्तह बैनना व बैना क़ौमिना बिल हक़्क़े व अन्ता ख़ैरुल फ़ातिहीन

ऐ क़दीरो ख़ालिको अर्ज़ो समा
ऐ रहीमो महरबानो रहनुमा
ऐ कि अज़ तू नीस्त चीज़े मुस्ततर
गर तू मे बीनी मिरा पुर फ़िसक़ो शर
गर तू दीद अस्तो कि हस्तम बद गुहर
पारा-पारा कुन मने बदकार रा
शाद कुन ईं जुमरए अग़्यार रा
बर दिलो शां बर दरो दीवार मन
दुश्मनम बाशे तब्ह कुन कारे मन
वर मिरा अज़ बन्दगानत याफ़्ती
क़िब्लए मन आस्तानत याफ़्ती

दर दिले मन आं मुहब्बत दीदए

कज़ जहां आं राज़ रा पोशीदए

बअम्न अज़ रूए मुहब्बत कारकुन

अंदके इफ़्शा आं असरार कुन

(हक़ीक़तुल महदी पृष्ठ-1, रूहानी ख़ज़ायन, पृष्ठ-434, जिल्द-14)

अनुवाद - हे सामर्थ्यवान ! पृथ्वी तथा आकाश के स्रष्टा ! हे दयालु, कृपालु, पथ प्रदर्शक, हे वह जो हृदयों पर दृष्टि रखता है हे वह अस्तित्व कि तुझ से कोई वस्तु छिपी हुई नहीं। यदि तू मुझे अवज्ञा और चपलता से भरा हुआ देखता है यदि तूने मुझे देख लिया है कि मैं वास्तव में बुरा हूं तो तू मुझ दुराचारी के टुकड़े-टुकड़े कर दे तथा मेरे विरोधियों के गिरोह को प्रसन्न कर दे। उनके हृदयों पर अपनी दया का बादल बरसा तथा अपनी कृपा से उन की प्रत्येक मनोकामना पूर्ण कर दे और मेरे द्वार एवं दीवार पर अग्नि की वर्षा कर। मेरा शत्रु हो जा और मेरा कारोबार तबाह कर दे। किन्तु यदि तूने मुझे अपना आज्ञाकारी पाया है और मेरे हृदय में वह प्रेम देखा है जिसका भेद तूने संसार से गुप्त रखा है तो मुझ से प्रेम की दृष्टि से व्यवहार कर और उन रहस्यों को थोड़ा से प्रकट कर दे।

इस दुआ के पश्चात् आपके हाथ पर कई निशान प्रकट हुए और ख़ुदा तआला ने आपको संसार में मान्यता प्रदान की और आपको विनाश के स्थान पर हर रंग में उन्नति देकर अपनी सहायता और प्रेम का प्रमाण दे दिया। इसमें विचार करने वालों के लिए एक बड़ा निशान है।"

(अहमदिया पाकेट बुक भाग प्रथम पृष्ठ-211,212 से उद्धृत)

महान भविष्यवाणी
इस्लाम का वैभवशाली भविष्य
अन्तिम और पूर्ण विजय के दिन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार सूचना दी है कि वह मुझे बहुत श्रेष्ठता देगा और हृदयों में मेरा प्रेम बिठाएगा तथा मेरे सिलसिले को समस्त संसार में फैलाएगा और मेरे समुदाय को समस्त समुदायों पर विजयी करेगा तथा मेरे समुदाय के लोग ज्ञान और मा'रिफ़त में इतनी विशेषता प्राप्त करेंगे कि अपनी सच्चाई के प्रकाश, अपने तर्कों और निशानों की दृष्टि से सब का मुंह बन्द कर देंगे तथा प्रत्येक जाति इस झरने से पानी पिएगी और यह सिलसिला तीव्रता से बढ़ेगा, फलेगा यहां तक कि पृथ्वी पर छा जाएगा बहुत सी रोकें पैदा होंगी, परीक्षाएं आएंगी परन्तु ख़ुदा सब को मध्य से उठा देगा और अपने वादे को पूरा करेगा तथा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करके कहा — कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा, यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।

अत: हे सुनने वालो ! इन बातों को याद रखो और इन भविष्यवाणियों को अपने सन्दूक़ों में सुरक्षित रख लो कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा।"

(तजल्लियात-ए-इलाहिया पृष्ठ-21, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-20, पृष्ठ-409)

पुनः फ़रमाते हैं :-

"हे समस्त लोगो सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने पृथ्वी और आकाश बनाया। वह अपनी इस जमाअत को समस्त देशों में फैला देगा तथा तर्कों एवं प्रमाणों की दृष्टि से उनको सब पर विजयी

करेगा। वे दिन आते हैं अपितु निकट हैं कि संसार में केवल यही एक धर्म होगा जो सम्मान के साथ स्मरण किया जाएगा। ख़ुदा इस धर्म और इस सिलसिले में अत्यन्त उच्च स्तरीय एवं विलक्षण बरकत डालेगा तथा प्रत्येक को जो इसको मिटाने का विचार करता है असफल रखेगा और यह विजय सदैव रहेगी यहां तक कि प्रलय आ जाएगी .... आज के दिन से अभी तीसरी सदी पूरी नहीं होगी कि ईसा की प्रतीक्षा करने वाले क्या मुसलमान और क्या ईसाई बहुत निराशा और बोधभ्रम में पड़ कर इस झूठी आस्था को त्याग देंगे और संसार में एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा। मैं तो केवल बीजारोपण करने आया हूं। अत: मेरे हाथ से वह बीज बोया गया और अब वह बढ़ेगा, फूलेगा और कोई नहीं जो उसको रोक सके।"

(तज़्किरतुश्शहादतैन, पृष्ठ-64, 65 रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-20, पृष्ठ 66-67)

सच्चे दावे पर ललकार

यदि मेरे मुक़ाबले पर समस्त संसार की क़ौमें एकत्र हो जाएं और इस बात की तुलनात्मक परीक्षा हो कि ख़ुदा किस को ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें देता है और किस की दुआएं स्वीकार करता है तथा किस की सहायता करता है और किस के लिए बड़े-बड़े निशान दिखाता है, तो मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि मैं ही विजयी रहूंगा। क्या कोई है ? !! कि इस परीक्षा में मेरे मुकाबले पर आए। ख़ुदा ने हज़ारों निशान मुझे केवल इसलिए दिए हैं ताकि शत्रु को मालूम हो कि इस्लाम सच्चा है। मैं अपना कोई सम्मान नहीं चाहता अपितु उसका सम्मान चाहता हूं जिसके लिए मैं भेजा गया हूं।"

(हक़ीक़तुल पृष्ठ-176, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-22, पृष्ठ-181)

खुला चैलेन्ज

"मुझे उसके मुंह की क़सम है कि मैं अब भी उसको देख रहा हूं। संसार मुझे नहीं पहचानता परन्तु वह मुझे जानता है जिसने मुझे भेजा है। यह उन लोगों की ग़लती है और सरासर दुर्भाग्य है कि मेरा विनाश चाहते हैं। मैं वह वृक्ष हूं जिसे उसके वास्तविक स्वामी ने अपने हाथ से लगाया है। जो व्यक्ति मुझे काटना चाहता है उसका परिणाम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि वह क़ारून और यहूदा इस्क्रियूती और अबू जहल के भाग्य से कुछ भाग लेना चाहता है। मैं आर्द्र नेत्रों के साथ सदैव ही इस बात के लिए तैयार हूं कि कोई मैदान में निकले तथा नुबुव्वत की पद्धति पर मुझ से निर्णय करना चाहे फिर देखे कि ख़ुदा किस के साथ है परन्तु मैदान में निकलना किसी नपुंसक का काम नहीं। हां ग़ुलाम दस्तगीर हमारे देश पंजाब में कुफ़्र की सेना का एक सैनिक था जो मौत का शिकार हुआ। अब इन लोगों में से उसके समान भी कोई निकलना दुर्लभ एवं असंभव है। हे लोगो ! तुम निस्सन्देह समझ लो कि मेरे साथ वह हाथ है जो अन्तिम समय तक मुझ से वफ़ा करेगा। यदि तुम्हारे पुरुष तथा तुम्हारी स्त्रियां, तुम्हारे युवा और तुम्हारे वृद्ध, तुम्हारे छोटे और तुम्हारे बड़े सब मिलकर मेरी तबाही के लिए दुआएं करें यहां तक कि सज्दे करते-करते नाक गल जाए और हाथ शिथिल हो जाएं तब भी ख़ुदा तुम्हारी दुआ कदापि नहीं सुनेगा तथा नहीं रुकेगा जब तक वह अपने कार्य को पूर्ण न कर ले। यदि मनुष्यों में से एक भी मेरे साथ न हो तो ख़ुदा के फ़रिश्ते मेरे साथ होंगे और यदि तुम गवाही को छिपाओ तो निकट है कि पत्थर मेरे गवाही दें। अत: अपना प्राणों पर अत्याचार मत करो, झूठों के मुख और होते हैं तथा सच्चों के और। ख़ुदा किसी बात को फैसले के बिना नहीं छोड़ता।"

(अरबईन नं. 3, पृष्ठ 14-15, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-17, पृष्ठ 399-400)